चन्दामामा
फरवरी १९७९
Rs 1.25

DADDY
MUMMY
AND...
I
"ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना. अपने बच्चों की गुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए. ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/८, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फोन : ३२४४३२
EKCO
SKETCH PEN
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/68

चन्दामामा

फ़रवरी 1979

★

विषय-सूची

★

एक प्रति : १-२५

वार्षिक चन्दा : १५-००

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "आरण्यक" है। इस अंक से चन्दामामा में बाल वर्ष के स्मृति-चिह्न के रूप में "पुराण युग के बालकों" की कहानियाँ प्रकाशित की जा रही हैं। हमारी आशा ही नहीं, एवं पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को ये कहानियाँ अत्यंत रुचिकर प्रतीत होंगी।

अमर वाणी

गुरु लाघव मर्थानां
आरंभे कर्मणां फलं
दोषं वा यो नं जानाति
स बाल इति होच्चते ॥

[जो व्यक्ति कोई कार्य प्रारंभ करते हुए उसके परिणाम व गुण-दोषों को जानने का प्रयत्न नहीं करता, उसे लोग मूर्ख मानते है।]

वर्ष : ३१ | फ़रवरी १९७९ | अंक : ६

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

अइता सत्य नारायण, सूळ्ळूरपेट (आन्ध्र.)

प्रश्न: वर्षा कैसे होती है? वर्षा का पानी आकाश में कैसे जमा रहता है? साधारणत: वर्षा अक्तूबर और नवम्बर महीनों में होती है। क्यों? ओले कैसे गिरते हैं?

उत्तर: पृथ्वी पर अन्य द्रव्य राशियों की भांति पानी भी पृथ्वी की चुंबक शक्ति के कारण पृथ्वी से लगा रहता है। मगर हम जानते हैं कि पानी के गरम होने पर पानी के अणुओं की चालक शक्ति बढ़ जाती है। हम यह भी जानते हैं कि पानी के गरम किये बिना भी वह भाप का रूप धारण करता है। कपड़ों की नमी सूख जाती है। घड़ों में भरा पानी कुछ ही दिनों में सूखकर भाप का रूप धारण करता है। पानी के रूप में स्थित अणुओं की अपेक्षा भाप के रूप में स्थित अणुओं का वेग अधिक होता है। (पृथ्वी की चुंबक शक्ति से बचकर विशाल आकाश में फैलने के लिए आवश्यक वेग को "पलायन वेग" कहते हैं। किसी कारण से पानी के अणु भी पलायन वेग को प्राप्त कर ले तो वे भी पृथ्वी से बचकर जाते हैं। पर चन्द्रमा पर पलायन वेग बहुत ही कम होता है। क्योंकि चन्द्रमण्डल की चुंबक शक्ति पृथ्वी की तुलना में पाँचवाँ हिस्सा मात्र है। इसलिए यदि किसी समय भले ही चन्द्रमा पर पानी हो, वह कभी का चन्द्रमा को त्याग चुका होगा।)

भाप का रूप धारण करनेवाला पानी आकाश में जाकर धूलि कणों से मिलकर मेघ का रूप धारण करता है। लोहे से निर्मित जहाज जैसे पानी पर तिरता है, वैसे ही व्याकोच को प्राप्त जलकणों का समुदाय (मेघ) न केवल हवा में तिरता रहता है, बल्कि वायु के साथ बह जाता है। मौसमी हवा उसे विविध प्रदेशों में फैला देती है। ऐसी हालत में पहाड़ अगर उस हवा को रोकें, अथवा मेघ और अधिक ऊँचाई पर उठ जाये, या किसी कारण से मेघों का वायुमण्डल अचानक ठण्डा पड़ जाय तो मेघों का भाप पानी का रूप धारण कर बरस पड़ता है। यदि अचानक भाप ठण्डा पड़ गया तो पानी का भाप ओलों के रूप में बरस पड़ता है।

अगर आप के प्रदेश में अक्तूबर और नवम्बर महीने बरसात के मौसम हैं तो सारे संसार में ऐसा नहीं होता। सुमेरियन देशवासियों ने ६, ७ हजार वर्ष पूर्व जब राशि चक्र का निर्णय किया तब उन लोगों ने मकर, कुंभ और मीन राशियों को जल राशि निश्चित किया। क्योंकि उस समय सूर्य जब उन राशियों में प्रवेश करता है, तब वहाँ पर वह बरसात का मौसम था।

हाँ, कालिदास ने भी लगभग २४०० वर्ष पूर्व मेघ का वर्णन "धूम ज्योति स्सलिल मरुतां सन्निपात:" किया था न?

लब्ध प्रणाशं

[६७]

कृतघ्ना की कहानी

एक नगर में एक ब्राह्मण था। वह अपनी पत्नी को अपने प्राणों से ज्यादा प्यार करता था। मगर वह अपने पति के रिश्तेदारों से हमेशा झगड़ा करती, इस तरह उसने अपने पति की ज़िंदगी को दूबर बनाया। इसलिए उसने सोचा कि अपना गाँव छोड़कर, किसी दूर प्रदेश में चला जाय और सुख की ज़िंदगी जिये!

यों विचार कर वह ब्राह्मण अपनी पत्नी को साथ ले चल पड़ा। रास्ते में उन्हें एक रेगिस्तान पार करना पड़ा। कड़ी धूप पड़ रही थी। इसलिए ब्राह्मणी को बड़ी प्यास लगी। ब्राह्मण पानी लाने दूर तक चला गया, थोड़ी देर में लौटकर देखता क्या है, लू के लगने से उसकी पत्नी मर गई है। वह अपनी औरत को बहुत चाहता था। उसने भगवान से प्रार्थना की कि उसकी पत्नी को बचावे।

इस पर कोई अदृश्य वाणी सुनाई दी–"अगर तुम अपनी शेष ज़िंदगी में से आधी अपनी पत्नी को सौंपने के लिए तैयार हो तो वह पुनः जीवित हो उठेगी और उतने दिन तक जीवित रहेगी।"

ब्राह्मण ने कहा–"मैं अपनी ज़िंदगी में से आधी अपनी पत्नी को सौंप दूंगा।"

ब्राह्मण के मुंह से यह बात निकलने की देरी थी, ब्राह्मणी जी उठी, इसके बाद दोनों ने अपनी यात्रा चालू की।

थोड़े दिन की यात्रा के बाद वे एक नगर के बाहर की एक फुलवारी में पहुँचे। तब ब्राह्मण ने अपनी पत्नी को समझाया–"तुम यहीं पर रहो! मैं शहर में जाकर हम दोनों के वास्ते खाना लेते आऊँगा।"

ब्राह्मणी फुलवारी में बैठी थी। उस वक़्त एक लंगड़ा अपने मधुर कंठ से गाते हुए उधर से निकला। उसके गीत पर मुग्ध हो ब्राह्मणी उस पर मोहित हो उठी और बताया कि वह उसका प्रियतम बन जाये, वरना वह आत्महत्या कर लेगी।

"मैं तो लंगड़ा हूँ! मुझसे तुम्हारा क्या मतलब है?" लंगड़े ने पूछा।

"लंगड़े हुए तो क्या हुआ?" ब्राह्मणी ने कहा। आखिर लंगड़ा ब्राह्मणी के प्रियतम बनने को राजी हुआ।

थोड़ी देर बाद ब्राह्मण खाना लेकर आ पहुँचा। भोजन करने को अपनी पत्नी को बुलाया।

ब्राह्मणी ने कहा—"इस लंगड़े को भी थोड़ा खाना दो। बेचारा यह भी भूखा है।"

ब्राह्मण ने मान लिया। तीनों ने खाना खा लिया, तब ब्राह्मणी ने कहा—"हमारे कोई संतान नही है। तुम बाहर जाओगे तो मुझे अकेले घर पर रहना पड़ता है। घर का काम-काज करने के लिए कोई नहीं है। इसलिए इस लंगड़े को अपने साथ ले जायेंगे तो हमारी मदद करेगा।"

इस पर ब्राह्मण ने कहा—"यह लंगड़ा चल-फिर नहीं सकता। इसे कौन ढोयेगा?"

"तुम एक बड़ी टोकरी ले आओ। मैं इस लंगड़े को टोकरी में बिठाकर खुद ढो लूँगी।" ब्राह्मणी ने समझाया।

मूर्ख ब्राह्मण ने अपनी पत्नी के प्रति अमित प्रेम के कारण इस अर्थहीन इंतज़ाम को मान लिया और शहर में जाकर एक टोकरी ले आया। उसमें लंगड़े को बिठाकर ब्राह्मणी ढोने लगी।

रास्ते में एक गहरा कुआँ दिखाई दिया। उसके जगत पर बैठकर तीनों ने थोड़ी देर आराम किया। लंगड़े की मदद से ब्राह्मणी ने अचानक ब्राह्मण को कुएँ में ढकेल दिया। इसके बाद ब्राह्मणी लंगड़े को टोकरी में बिठाकर चल पड़ी।

वे दोनों एक बड़े नगर में पहुँचे। उस नगर पर एक धर्मात्मा राजा शासन करता

था। उस नगर के सिपाही ब्राह्मणी के सर पर टोकरी तथा उसमें बैठे लंगड़े को देख अचरज में आ गये और उस ब्राह्मणी को राजा के पास ले गये।

ब्राह्मणी ने राजा से कहा–"महाराज! यह लंगड़ा आदमी मेरे पति है। मेरे रिश्तेदारों ने इसे लंगड़ा बनाया और इसे मारने की कोशिश की, इसलिए मैं सब की आँख बचाकर एक दिन रात को इसे टोकरी में बिठाकर इस नगर में उठा लाई।"

"मैंने आज तक तुम जैसी उत्तम गृहिणी को कहीं नहीं देखा है। मैं तुम्हें दो गाँव इनाम में दे रहा हूँ, सुखी रहो।" राजा ने कहा।

ब्राह्मणी बहुत ही प्रसन्न हो उठी और वहाँ से चल पड़ी। तभी उसका पति वहाँ पर आ पहुँचा। जब ब्राह्मण कुएँ में गिर पड़ा, तब उसकी चिल्लाहट सुनकर किसी सन्यासी ने उसे बचाया था।

अपने पति को उधर बढ़ते देख ब्राह्मणी ने राजा से कहा–"महाराज! यही व्यक्ति मेरे पति का जानी दुश्मन है।"

राजा ने आज्ञा दी–"सिपाहियो, इसको मार डालो।" इस पर ब्राह्मण ने राजा से निवेदन किया–"महाराज! मेरा वध करने के पहले इस औरत से मेरे उधार को ब्याज सहित चुकाने को कहियेगा।"

राजा ने ब्राह्मणी से पूछा–"इस व्यक्ति ने तुम्हें क्या दिया है?"
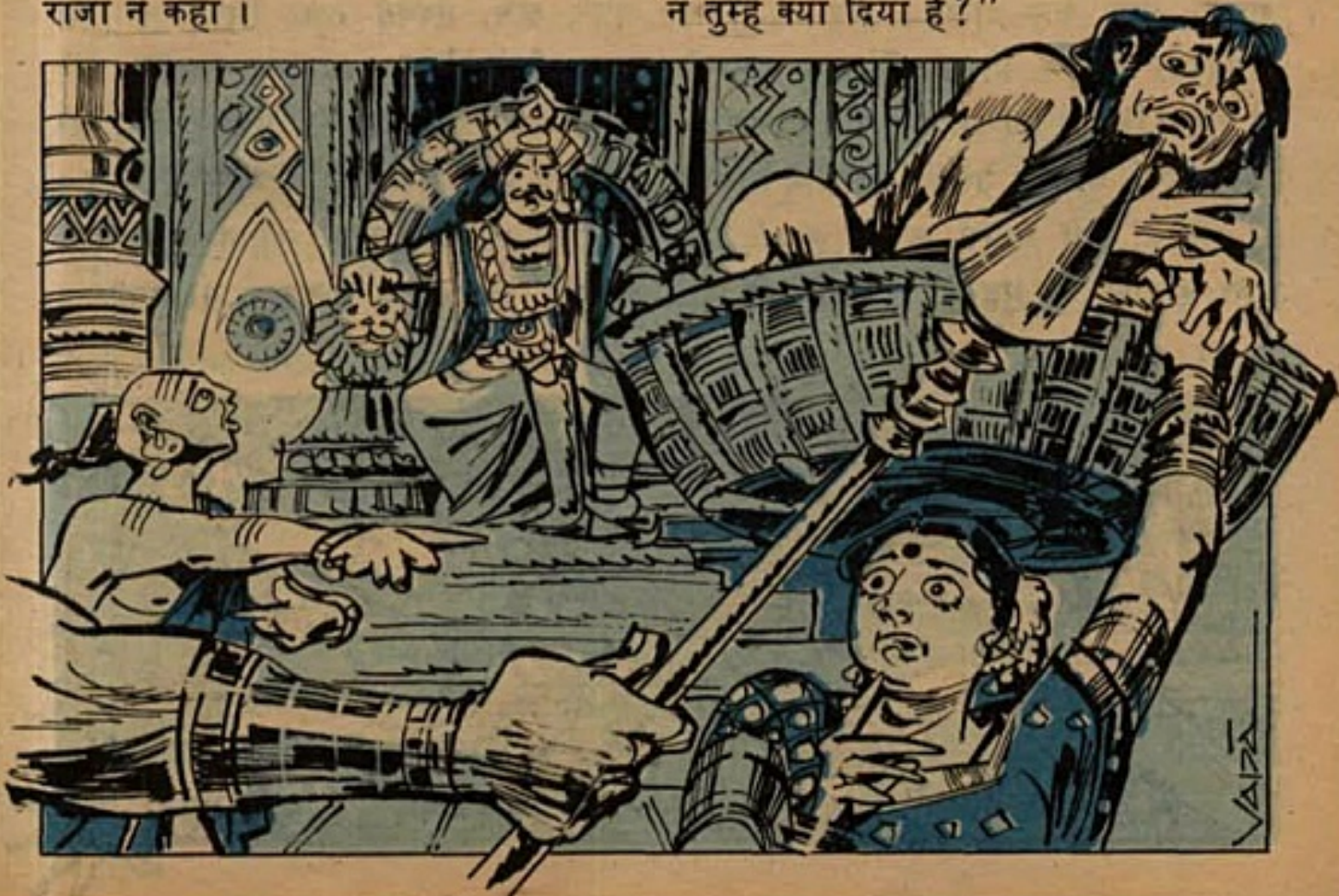
"महाराज! इसने मुझे कुछ नहीं दिया।" ब्राह्मणी ने स्पष्ट उत्तर दिया।

"तुम रेगिस्तान में जब मर गई थी, तब मैंने अपनी आयु में से आधी दान करके तुम को जिलाया। क्या यह बात सच नहीं है?" ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से पूछा। इसके बाद राजा की ओर मुड़कर कहा–"महाराज! इसके वास्ते मैंने अपने सारे रिश्तेदारों से नाता तोड़ दिया। अपनी आधी आयु इसे सौंप दी। इसके बदले यह मेरे प्रति कृतघ्ना बनकर इस लंगड़े को प्रियतम बनाकर आप के हाथों अन्यायपूर्वक मेरी हत्या करानी चाहती है।"

राजा ने कड़ककर ब्राह्मणी से सच बताने को कहा। इस पर ब्राह्मणी ने सच्ची बात कह डाली। तब राजा ने ज़बर्दस्ती ब्राह्मण को उसकी आयु ब्राह्मणी से वापस दिलाते हुए ब्राह्मणी से कहलवाया– "मैंने अपने पति से उसकी जो आयु उधार में ली है, उसे वापस करती हूँ।" यह बात ब्राह्मणी के मुँह से निकलते ही वह मृत होकर गिर पड़ी। बंदर ने मगर-मच्छ को कृतघ्ना की कहानी सुनाकर आगे यों बताया: "हे मूर्ख! हद से ज़्यादा बकनेवाले तोतों को पिंजड़ों में बंद करते हैं। लेकिन कम बोलनेवाले बगुले स्वेच्छापूर्वक विचरण करते हैं। अब तुम चले जाओ, वरना तुम्हारी गर्दन पकड़कर तुम्हें बाहर निकाल देना पड़ेगा।"

इसके उत्तर में मगर मच्छ ने कहा– "मेरे मज़ाक़ को तुमने गलत समझा। मैं विश्वासपात्र व्यक्ति हूँ। मैं कभी तुम्हारे साथ द्रोह नहीं करूँगा। यही बात मैं तुम्हें समझा रहा हूँ।"

"अरे पत्नी के दास! तुम जैसे व्यक्ति अपनी पत्नियों को प्रसन्न करने के लिए अपने क्षेम, ऐश्वर्य तथा मित्रों को भी त्याग बैठते हैं। जब नंद, वररुचि जैसे लोग अपनी पत्नियों के गुलाम बने, तो तुम्हारा क्या हाल है?" बंदर ने कहा।

मगर मच्छ ने उनकी कहानी सुनाने का अनुरोध किया, तब बन्दर ने यों सुनाया:

भल्लूक मांत्रिक

[७]

[जंगल में डाकुओं के नेता नागमल्ल ने राजा दुर्मुख को बन्दी बनाया, इस पर दुर्मुख ने अपना नाम दुर्जय गुप्त बताकर भाग जाना चाहा, पर नागमल्ल उसकी बातों पर विश्वास न करके उसे एक गुफा में ले गया। बधिक भल्लूक पहुँचकर उन्हें धमकी देने लगा, तब उग्रदण्ड नामक एक राक्षस आ पहुँचा, भल्लूक ने उस पर वार करना चाहा। बाद...]

बधिक भल्लूक परसु को उठाकर अपनी ओर बढ़ते देख राक्षस उग्रदण्ड पल भर के लिए चकित रह गया, फिर किसी बात की याद करके कांप उठा। तब अपने पत्थर का गदा उठाकर गरज उठा– "अरे कमबख्त मानव भल्लूक! ठहर जाओ; यह तुम्हारी कैसी हिम्मत है?"

बधिक भल्लूक हठात् रुक गया। उग्रदण्ड की ओर परखकर देखते हुए बोला–"अरे उग्रदण्ड! तुम अपने को राक्षस होने का घमण्ड करते हो! मेरे सामने तुम्हारा यह अहंकार चलने का नहीं! मैं देख ही तो रहा हूँ कि तुम्हारे पैर और हाथ कैसे कांप रहे हैं?"

उग्रदण्ड ने दांत भीचते एक बार जमीन पर अपने पैरों को पटक दिया, तब कहा–"यह मत समझो कि तुम को देख मैं डर रहा हूँ! बल्कि इसलिए कि

हुआ। तब बधिक से बोला–"बधिक भल्लूक! तुम शांत हो जाओ! यह बात समझने की कोशिश करो कि अगर हम एक दूसरे की हत्या करने की कोशिश में खूब घायल हो जाते हैं तो जानते हो कौन इसका फ़ायदा उठानेवाला है?"

यह सवाल सुनते ही बधिक भल्लूक को इस बात की याद आ गई कि वह उस प्रदेश में क्यों आया है? भल्लूक मांत्रिक ने उदयगिरि के राजा दुष्ट दुर्मुख का सर काटने के लिए ही उसे भेजा था! उसे तो अपना काम समाप्त कर फिर से भल्लूक मांत्रिक के पास लौटना है। ऐसी हालत में नाहक़ उसे उग्रदण्ड से झगड़ा क्यों मोल लेना है? यह बात सही है कि उग्रदण्ड ने ही उसे पहले उकसाया, इसके फल स्वरूप उसने उस पर हमला किया, वह डरकर भाग गया। इसका मतलब है कि उसकी जीत हो गई है!

मैं तुम से घृणा करता हूँ, इस कारण क्रोध के मारे मेरा शरीर कांप रहा है! तुम्हारा यह विकृत रूप कैसा? तुम आधे मानव हो और आधा जानवर!"

ये बातें सुन बधिक भल्लूक एक शिला पर जोर से अपना परसु चलाकर गरज उठा–"अरे कमबख्त राक्षस! महान भल्लूक मांत्रिक के द्वारा निर्मित इस बधिक भल्लूक की तुम अवहेलना कर रहे हो! देखो! अभी तुम्हारा सिर कटकर नीचे गिरने जा रहा है!" यों कहकर वह राक्षस पर परसु का प्रहार करने को हुआ।

उग्रदण्ड उछलकर वार से बचते हुए निकट के एक साल वृक्ष के पास जा खड़ा

इस विचार के आते ही बधिक भल्लूक ने अपने परसु के पाल को परखकर देखा, तब बोला–"अरे उग्रदण्ड! तुमने वक़्त पर मेरे यहाँ पर आने की बात याद दिलाई। तुम पर मैं प्रसन्न हूँ। अब तुम अपने रास्ते जा सकते हो! मैं इस बगल की गुफा में छिपे राजा दुर्मुख का सर काटकर अपने रास्ते आप चला जाऊँगा।" यों कहकर बधिक वापस मुड़ गया।

तब उग्रदण्ड दो क़दम आगे बढ़ाकर बोला–"अरे बधिक भल्लूक! थोड़ा रुकते जाओ! तुमने अभी थोड़ी देर पहले भल्लूक मांत्रिक का नाम लिया! मैंने जिस भल्लूक मांत्रिक का नाम सुन रखा है, उसी भल्लूक मांत्रिक का नाम तो नहीं ले रहे हो! उनकी क्या उम्र होगी?"

यह बात सुनकर बधिक भल्लूक ठहाके मारकर हँस पड़ा और बोला–"अबे जानते हो? सूर्य और चन्द्रमा की जो उम्र होगी, गुरु भल्लूक मांत्रिक की भी वही उम्र है! समझे! उनकी आँखों के सामने ही हिमालय पर्वत पैदा हुए और इतने ऊँचे हो गये! ब्रह्मपुत्र नदी के सोता बनकर इस तरह विशाल रूप को लेते हुए उन्होंने देखा है! अब बात समझ में आ गई?"

"शाबाश बधिक भल्लूक! तुम्हारे हाथ के परसु का फाल जितना पैनी है, तुम्हारी जीभ भी वैसी तेज़ है! मैं सचमुच तुम पर प्रसन्न हूँ! बताओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलकर गुरु भल्लूक मांत्रिक के दर्शन कर लूँ तो कैसा होगा?" उग्रदण्ड ने अपने पत्थर के गदे को दूर फेंकते हुए पूछा।

राक्षस के इस व्यवहार पर बधिक भल्लूक विस्मय में आ गया, तब बोला–"सुनो, तुमने पत्थर के गदे को दूर फेंक दिया। इसके पीछे कोई रहस्य तो नहीं है?"

"क्यों नहीं? इस पल से हम दोनों दोस्त हैं!" उग्रदण्ड ने उत्तर दिया।

यह उत्तर सुनकर बधिक भल्लूक खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला–"भल्लूक मांत्रिक के हाथी के मस्तकवाले मंत्र-दण्ड के स्पर्श से मेरा पुराना रूप बदल गया था, फिर भी मुझे वह रूप याद है। मैं जिस क्षण राजा दुर्मुख का सिर काटकर उनके हाथ सौंप दूंगा, उसके दूसरे ही क्षण वे मुझे बधिक के रूप में बदल डालेंगे। इसलिए हम दोनों के बीच दोस्ती नामुमक़िन है! तुम अपनी गुफा में जा सकते हो!" यों कहकर बधिक भल्लूक लुटेरों के नेता

और राजा दुर्मुख के छिपे गुफा की ओर चल पड़ा।

इसके बाद बधिक भल्लूक गुफा पर ढकी चट्टान को हटाने के प्रयत्न में डूब गया, तब भीतर छिपे राजा के अंग रक्षक ने कांपते हुए लुटेरों के नेता नागमल्ल से कहा—"नागमल्ल! इस बार महाराजा के साथ हम सब की मौत निश्चित है! अब हम क्या करें?"

नागमल्ल ने राजा दुर्मुख की ओर प्रश्न भरी दृष्टि दौड़ाई। दुर्मुख मन ही मन गुनगुनाते गुफा के द्वार की ओर ताक रहा था। नागमल्ल ने अपने अनुचरों को चेतावनी दी कि वे तलवार खींचकर लड़ने के लिए तैयार हो जावे, तब दुर्मुख से बोला—"सुनो, तुम्हारे अंग रक्षक की बातों से अब साफ़ मालूम हो गया कि तुम दुर्जय गुप्त नहीं हो, बल्कि राजा हो! वह बधिक भल्लूक तुम्हारा सर लेने आया हुआ है। ऐसी हालत में तुम अपनी आत्मरक्षा का प्रयत्न न करके गुनगुनाते क्या हो?"

"मैं गुनगुना नहीं रहा हूँ! आगे का प्रयत्न जानने के लिए अपने आराध्य की प्रार्थना कर रहा हूँ।" राजा दुर्मुख ने भर्राई आवाज़ में उत्तर दिया।

"तो इसका मतलब यह हुआ कि आज तक तुमने जो कुछ किया, अपने आराध्य देव की अनुमति से ही किया है? छी! बाहर चले जाओ!" ये शब्द कहते नागमल्ल ने दुर्मुख को अलग हटाया, अध खुली गुफा के द्वार के निकट जाकर ऊँची आवाज़ में बोला—"अजी बधिक भल्लूक! सुनो, तुम वास्तव में इस गुफा में छिपे लोगों में से अपने को दुर्जय गुप्त बताकर झूठ बोलनेवाले राजा दुर्मुख को ही चाहते हो न?"

"हाँ-हाँ! बाक़ी लोगों से मेरा कोई मतलब नहीं है! उसे गुफा से बाहर ढकेल दो! मैं सिर्फ़ उसका सर काटकर ले जाऊँगा!" बधिक भल्लूक ने समझाया।

"तब तो थोड़ा सब्र करो!" यों कहकर लुटेरों का नेता नागमल्ल राजा दुर्मुख से

बोला–"राजा दुर्मुख! तुमने बधिक भल्लूक की बात अच्छी तरह से सुन ली है न? तुम्हारी मौत अब निश्चित है, ऐसी हालत में तुम राजोचित रूप में तलवार हाथ में लेकर बधिक भल्लूक के साथ लड़ते अपने प्राण क्यों नहीं देते?"

ये शब्द सुनने पर राजा दुर्मुख का चेहरा पीला पड़ गया। वह घबराकर बोला–"मैं राजोचित शान के साथ जीना जानता हूँ, मगर राजोचित मौत मरना नहीं!" यों उत्तर दे अपनी बगल में स्थित अंग रक्षक से बोला–"अरे अंग रक्षक! तुम्हें अपनी स्वामिभक्ति का परिचय देकर स्वर्ग पाने का यही एक अच्छा मौक़ा है! तुम आगे बढ़कर बधिक भल्लूक का सामना करो! मैं इस बीच देखूंगा कि अपने प्राणों के साथ बचकर भागने का शायद कोई उपाय निकल जाय!"

अंग रक्षक ने जो अपनी तलवार म्यान से खींच रखी थी, उसे फिर म्यान में रखते हुए कहा–"महाराज! मैं अगर मरकर स्वर्ग में चला जाऊँगा तो मेरी पत्नी और बच्चों की क्या हालत होगी? मैं अभी स्वर्ग में जाना नहीं चाहता!" यों कहते उसने अपनी आँखें बंद कीं।

इस बीच बधिक भल्लूक ने बाहर से क्रोध के मारे दांत किटकिटाते पूछा–"अरे, वह दुष्ट दुर्मुख राजा कहाँ पर है? मैं अगर गुफा में घुस पड़ा तो तुम सब के सिर काट डालूंगा।"

डाकू नागमल्ल ने अपने दोनों अनुचरों को आँख का इशारा किया, जब वे उसके पीछे चले आये, तब गुफा के द्वार पर स्थित चट्टान को हटाकर बाहर सिर रखा और बोला–"महाशय! मुझे और मेरे दो अनुचरों को प्राणों के साथ छोड़ दो। हम लोग इस प्रदेश में जंगल के खूंख्वार जानवरों के बीच जान हथेली पर ले जीनेवाले हैं।"

"अबे, तुम लोग चोर हो! यह बात मैं जानता हूँ। फिर भी मैं तुम्हारा कुछ

नहीं बिगाड़ूँगा। तुम लोग बाहर आ जाओ।" बधिक भल्लूक ने कहा।

इसके बाद नागमल्ल और उसके अनुचर पूर्ण रूप से चट्टान को हटाकर बाहर आ गये। उनकी आड़ में छिपकर राजा दुर्मुख तेजी के साथ बाहर आया और भागने को हुआ।

इस पर बधिक भल्लूक उछलकर कूद पड़ा और चिल्ला उठा—"अरे दुर्मुख! रुक जाओ!" यों कहते बधिक उसका पीछा करने लगा। राजा दुर्मुख एक पेड़ की ओट में छिपने गया, तब सामने पत्थर का गदा लिये खड़े हुए राक्षस उग्रदण्ड को देख चीख उठा और उसके चरणों में गिर पड़ा।

बधिक भल्लूक खुशी में आकर बोला—"अरे दुष्ट दुर्मुख! तुम मेरे हाथों में आ गये।" यों कहते वह राजा दुर्मुख के समीप पहुँचा ही था, तब उग्रदण्ड ने अपने गदे को जमीन पर टिकाकर हाथ उठाकर रोकते पूछा—"भाई! बधिक भल्लूक! यह बताओ, गुरु भल्लूक मांत्रिक ने तुम्हें जिंदा राजा के सर को काटकर लाने का आदेश दिया है या मृत दुर्मुख राजा का सर?"

यह सवाल सुनकर बधिक भल्लूक अचरज में आ गया और निश्चल गिरे दुर्मुख की ओर परखते हुए देख पूछा—"उग्रदण्ड! क्या तुम समझते हो कि यह दुर्मुख मर गया है?"

"यह तो मरा नहीं, बेहोश हो गया है! बुजुर्गों ने बताया है कि जो बेहोश है, उसका सर काटना महान पाप है। तुम एक काम करो! इसे गुरु भल्लूक मांत्रिक के पास ले जाकर वहीं पर इसका सर काट डालो। वहाँ पर पहुँचते-पहुँचते यह जरूर होश में आ जाएगा!" उग्रदण्ड ने समझाया।

बधिक भल्लूक फुत्कार मारनेवाले जैसे गहरी साँस लेकर बोला—"छी छी! तुम बताते हो कि मैं अपने दुश्मन को कंधे पर उठाकर ढो लूँ?"

उग्रदण्ड ने एक बार गुफा की ओर नजर डाली। वहाँ पर नागमल्ल और

उसके दो अनुचर खड़े हो भागने की कोशिश में कोई कानाफूसी कर रहे थे। इस पर उग्रदण्ड ने पत्थर के गदे को हाथ में लेकर ललकारा–"अरे, राहगीरों को लूटनेवाले कमबख्त डाकुओ! तुम लोग भाग जाने की बात सोच रहे हो? खबरदार! मैं तुम लोगों को अपने पैरों के नीचे रौंध डालूंगा। यहाँ पर आ जाओ! सुनो, वह अंग रक्षक कहाँ पर है?"

ये बातें सुन तीनों डाकू थर थर कांप उठे। नागमल्ल ने गुफा के भीतर झांककर देखा, तब बोला–"महाशय! ऐसा लगता है कि राजा दुर्मुख का अंग रक्षक भी बेहोश हो गया है। वह गुफा से सट कर लुढ़क पड़ा है और काठ जैसे सिकुड़ गया है।"

"वह तो बेहोशी का स्वांग रच रहा है। उससे कह दो कि उग्रदण्ड उसे अभय दान दे रहे हैं!" उग्रदण्ड ने आदेश दिया।

इस पर लुटेरों के नेता नागमल्ल ने जोर से चिल्लाकर कहा–"अरे अंग रक्षक! होश में आ जाओ! महा राक्षस उग्रदण्ड ने तुम को प्राणों के साथ बचाने का अभय दान दे दिया है।"

ये शब्द सुन अंग रक्षक झट से उठ बैठा। घुटनों पर रेंगते गुफा से बाहर

आया और कांपते स्वर में पूछा–"क्या महाराजा दुर्मुख का सर कट गया है? वह भयंकर बधिक भल्लूक यहाँ से चल गया है?"

इसके दूसरे ही क्षण नागमल्ल के अनुचरों ने उसकी ओर लपककर एक ने अंग रक्षक की गर्दन पकड़ ली और दूसरे ने उसकी कमर पकड़कर गुफा के बाहर खींच डाला, तब कहा–"तुम बकवास बंद करो! लो, देखो! तुम्हारा राजा दुर्मुख उग्रदण्ड के चरणों पर बेहोश गिर पड़ा है!"

अंग रक्षक आपाद मस्तक कांप उठा। उग्रदण्ड के आगे जाकर बोला–"महा राक्षस! मैं इस क्षण से आप ही का अंग

रक्षक हूँ। आप मुझे इस बधिक भल्लूक से बचा लीजिए!"

उग्रदण्ड विकट अट्टहास करके बोला–"तब तो मेरे प्राणों की रक्षा करने के लिए एक अंग रक्षक निकल आया है। ओह! एक महा राक्षस की कैसी दुर्गति हो गई है!" फिर धीरे से बोला–"अरे रक्षक! तुम सामनेवाली उस गुफा में जाकर एक शिला पात्र ले लो और उन पेड़ों के पीछेवाले तालाब में से पानी ले आओ! इस बीच हम कोशिश करके देखेंगे कि दुर्मुख को होश में लाने का शायद और कोई उपाय हो!"

अंग रक्षक ने विस्मय में आकर पूछा–"ओह! हमारे राजा के होश में आने पर ही शायद बधिक भल्लूक साहब उनका सर काटकर ले जाना चाहते हैं।"

इस पर बधिक भल्लूक ने आँखें लाल करके परसु उठाकर पूछा–"अरे मूर्ख! क्या भूल गये, महा राक्षस उग्रदण्ड ने तुम्हें कौन सा आदेश दिया है?"

इसके बाद तुरंत अंग रक्षक राक्षस की गुफा में दौड़ पड़ा, वहाँ से एक पत्थर का पात्र लेकर तालाब की ओर चला गया। वह पात्र में पानी भर ही रहा था कि बगल में पेड़ों के समूह में खड़ा सूंड कटा हाथी उसे देख घींकार कर उठा और उसकी ओर तेजी के साथ दौड़ आया।

इस पर अंग रक्षक पात्र को वहीं पर छोड़कर चीखते-चिल्लाते उग्रदण्ड के निकट दौड़ते आ पहुँचा, तब बोला–"महाशय! बधिक भल्लूक साहब का सूंड कटा हाथी मेरा पीछा करते इसी ओर दौड़ा चला आ रहा है! मुझे बचाइये!"

"ओह! तब तो मेरा वाहन इसी प्रदेश में है!" यों कहते बधिक भल्लूक ने सिर घुमाकर उस दिशा में देखा, तभी हाथी अपनी सूंड ऊपर उठाकर घींकार करते भयंकर भूत की भांति उन पर हमला करने को हुआ।

(और है)

आरण्यक

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया ।

पेड़ पर से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा । तब शव में स्थित बेताल ने पूछा–"राजन, आप राजनीति को छोड़ जंगली परिश्रम में प्रवेश कर रहे हैं तो पिछले दिनों में आरण्यक नामक एक जंगली ने राजनीति में प्रवेश किया था । श्रम को भुलाने के लिए मैं आप को उसकी कहानी सुनाता हूँ, सुनिये ।"

बेताल यों सुनाने लगा : चन्द्रगिरि के राजा अमरपाल के नाम से बड़े-बड़े राजा भी कांप उठते थे । उनके साथ युद्ध करके कोई भी विजयी न हो सका । उनके इस प्रकार अजेय बन जाने का कारण उनकी सेना की जंगली सैनिक टुकड़ियां थीं ।

जंगली निवासियों के केन्द्र चन्द्रगिरि के समीप दुर्गम जंगल थे । उनके एक

बेताल कथाएँ

नेता था। चन्द्रगिरि के राज्य के वास्ते जंगली नेता और उसकी प्रजा अपना सर्वस्व त्यागने को सदा तैयार रहा करते थे। जंगली दल का नेता राजा अमलपाल के साथ अत्यंत मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखता था। वह हर साल राजा के पास जंगली संपत्ति के साथ अत्यंत ही वीर युवक योद्धाओं को सैनिकों के रूप में भेजा करता था। उन युवकों के साथ राजा अमलपाल ने जंगली सैनिक दलों का निर्माण किया और अपने पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करके उन पर अधिकार कर लिया। उन राज्यों से वे प्रति वर्ष राज-शुल्क वसूल किया करते थे।

कुछ वर्ष बाद जंगली नेता का पुत्र आरण्यक जब जवान बना तब वह सोचने लगा कि राजा अमरपाल के द्वारा जंगली जाति का असाधारण रूप से अन्याय हो रहा है। हर साल राजा अमरपाल के कर्मचारी उन जंगलों में जाते, जंगली संपत्ति के साथ राजा की सेना में भर्ती कराने के लिए वीर युवकों को पकड़कर ले जाया करते थे।

आरण्यक ने एक बार इस रिवाज़ का प्रतिवाद किया—"पिताजी, हम लोग राजा को शुल्क क्यों समर्पित कर रहे हैं? उन्होंने हम पर कब विजय पाई थी? हमारी संपत्ति और युवकों को ले जाकर हमें दरिद्र और निर्बल बनाये रखने का अधिकार राजा को कैसे प्राप्त हुआ?"

इस पर आरण्यक के पिता ने हँसकर समझाया—"बेटा! क्या राजा के पास जो जंगली सैनिक दल हैं, वे हमारे नहीं हैं? राजा की शक्ति क्या हमारी शक्ति नहीं है? जब राजा हमारे हैं, तब कोई भी हमारी ओर आँख उठाकर देख सकता है?"

"पिताजी, आप भूल कर रहे हैं? राजा की शक्ति हमारी शक्ति कभी नहीं हो सकती! असली बात यह है कि हमारी शक्ति ही राजा की शक्ति है। हम स्वतंत्र नहीं हैं। हम राजा के सामंत हैं। राजा

के कर्मचारी आकर जब हम से शुल्क माँगेंगे, तब अगर हम इनकार कर बैठेंगे, तभी जाकर आप को सचाई का पता चल जाएगा।" आरण्यक ने समझाया।

ये बातें सुनने के बाद जंगली नेता ने बड़ी देर तक विचार किया, तब जंगली लोगों की सभा में उसने घोषणा की– "भाइयो, मैं अपने नेता के पद को त्याग रहा हूँ। आज से आरण्यक तुम लोगों का नेता होगा। तुम सब को इसके आदेशों का पालन करना है।"

थोड़े दिन बाद राजकर्मचारियों ने आकर हर साल की भांति बांस के चावल, चंदन की लकड़ी, बघ चर्म, हाथी और पच्चीस नौ जवान वीरों की माँग की।

इस पर आरण्यक ने राजकर्मचारियों से स्पष्ट बताया–"हमें आप को यह शुल्क चुकाने की कोई ज़रूरत नहीं है। चन्द्र गिरि का राजा जैसे आप लोगों का है, वैसे हमारा भी है। हम तो स्वतंत्र नागरिक हैं। लेकिन हमारे सारे युवक आप की सेना में भर्ती हो गये हैं, इस कारण हम दुर्बल बनकर आत्मरक्षा तक न करने की स्थिति में आ गये हैं। आइंदा यह क्रम नहीं चलने का है। आप लोग राजा से बता दीजिए कि कृपया वे हमारे जंगली सैनिक दलों को वापस भेजें।

जंगल की सारी संपत्ति जंगल के निवासियों की है। अगर राजा की आर्थिक स्थिति डँवाडोल हो जाय तो वे हमारी संपत्ति पर निर्भर हो सकते हैं। इसी प्रकार राजा के राज्य के लिए कभी शत्रु का भय पैदा होगा, उस वक़्त देश की रक्षा के हेतु हमारे सैनिक दल लड़ने को तैयार रहेंगे। मैं इस बात का वादा करता हूँ।"

इसके बाद राजकर्मचारी खाली हाथ वापस चले गये। पर दूसरे दिन राजा के यहाँ से आरण्यक के पास यह ताक़ीद पहुँची–"जंगली निवासी स्वतंत्र नहीं हैं। वे राजा अमरपाल के शासन के अधीन हैं। पुराने रिवाज़ के अनुसार अगर दो दिन के

अन्दर जंगली संपत्ति राजा की सेवा में न पहुँची तो राजा की सेना में स्थित जंगली सैनिक दलों को मार डाला जाएगा। साथ ही जंगली जाति के सारे केन्द्र मटियामेट किये जायेंगे।"

यह संवाद सुनने पर आरण्यक को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उसने राजा के दूतों को समझाया—"हम लोग राजा के सामंत नहीं। अगर राजा हम को पराजित करेंगे, तभी जाकर यह निर्णय होगा कि कौन किसके सामंत हैं!"

इसके बाद आरण्यक युद्ध के लिए तैयार हो गया। उसकी योजना यह थी कि राजा अगर जंगली सैनिक दलों को उन्हें दबाने के लिए भेज दे तो उन्हें वहीं रोक रखा जाय! मगर जंगली केन्द्रों पर हमला करने आये हुए सैनिकों में एक भी जंगली वीर नहीं था। पर उन सैनिकों को जंगली योद्धाओं ने प्रच्छन्न युद्ध में मार डाला। कई सैनिक बन्दी बन गये। कुछ लोग घायल हो भाग गये।

आरण्यक ने बन्दी बने सैनिकों से पूछा—"हमारी जाति के सैनिक दल युद्ध में क्यों नहीं आये?" बंदियों ने बताया कि वे कारागार में असहनीय यातनाएँ झेल रहे हैं।

राजा की ताक़ीद पाने पर आरण्यक के मन में जो शंका थी, वह सच्ची साबित हुई।

कुछ लुटेरे उस घने जंगल में मेना के साथ जाते जंगली निवासियों की दृष्टि में पड़े। लुटेरों तथा जंगली युवकों के बीच युद्ध हुआ। उस युद्ध में सारे लुटेरे बन्दी बने। वास्तव में मेना में राजकुमारी थी। लुटेरे भी वाकई लुटेरे न थे। जब आरण्यक ने लुटेरों की हड्डी पसली तोड़ देने की धमकी दी तब उन लोगों ने बताया कि राजा की एक मात्र संतान राजकुमारी को जंगल में ले जाकर मार डालने के लिए मंत्री ने उन्हें नियुक्त किया है।

आरण्यक की शंका सचाई में बदल गई। उसने मंत्री के अनुचरों को बताया—"राजकुमारी की रक्षा की जिम्मेदारी मेरी

है। पर तुम लोग यह शुभ समाचार ले आये हो, इसलिए मैं तुम लोगों को मुक्त कर रहा हूँ। मेरे और मंत्री का भी आशय एक ही है। मैं मंत्री साहब को गद्दी पर बिठाने के लिए तैयार हूँ। इस संबंध में वार्तालाप करने के लिए उन्हें यहाँ पर भेज दो।" यह खबर मिलते ही मंत्री महोदय आरण्यक से मिलने आ पहुँचा। आरण्यक ने उसी वक़्त मंत्री को मार डाला और राजकुमारी को साथ ले राजा के दर्शन करने पहुँचा। राजकुमारी का अपहरण और मंत्री की मृत्यु की खबर सुनकर राजा बोले–"तुम लोगों के द्वारा मैंने अनेक विजय प्राप्त की। तुमने मुझे एक भयंकर षड़यंत्र से बचाया। मैंने कभी तुम लोगों को अपना सामंत नहीं माना। तुम्हारे पिता मेरे प्रति मैत्री भाव के कारण तुम्हारी संपत्ति और युवकों को मेरे अधीन रखते गये। तुमने अगर इसका विरोध किया तो यह तुम्हारी गलती नहीं है। तुम्हारे जंगली योद्धाओं को कारागार में बंद करने की बात भी मैं नहीं जानता। हम तो यही चाहते हैं कि हमारे बीच बराबर मैत्री भाव बने रहें, तुम्हारे सैनिक राजधानी में रहे या जंगल में, दोनों बराबर है। तुम चाहे तो उन दलों को अपने साथ ले जाओ।"

"नहीं, महाराज! आप हमारे दलों को अपने ही पास रखे। उन्हें अच्छा प्रशिक्षण मिलेगा।" यों कहकर आरण्यक राजा से अनुमति लेकर अपने निवास को लौट गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा–"राजन, राजा अमरपाल की ताक़ीद पाने पर आरण्यक के मन में कैसी शंका पैदा हुई? उसे यह कैसे मालूम हुआ कि उसी के जैसे मंत्री भी राजा का पतन चाहता है? जब इसका समाचार मिला तब मंत्री को बुलवाकर उसका वध क्यों किया? इन सब घटनाओं के बाद आरण्यक ने अपने पिता के जमाने के रिवाज़ों को पूर्ण

रूप से क्यों स्वीकार किया? इन प्रश्नों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया— "कुछ हद तक आरण्यक की यह धारणा गलत ही थी कि उसके पिता ने राजा के प्रति स्नेहपूर्ण व्यवहार नहीं बल्कि गुलामी की भावना से व्यवहार किया है। मगर इस धारणा के पीछे उचित कारण भी है। राजा के कर्मचारी शुल्क के रूप में उनकी संपत्ति व युवकों को ले जाते देख वह सहन न कर पाया। इसलिए जब वह नेता बना तब उसने इस प्रथा का विरोध किया। शायद उसका उद्देश्य था कि राजा का निर्णय देख उसके आधार पर यह जान ले कि उसके पिता का व्यवहार सही था या नहीं। मगर उसने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि राजा शुल्क के वास्ते जंगली दलों को कारागार में रखकर उन्हें मार डालेंगे। क्योंकि राजा के द्वारा उन दलों का अंत करना आत्महत्या के सदृश्य है। इसलिए उसके मन में यह संदेह पैदा हुआ कि राजा के द्वारा भेजा गया संदेश वास्तव में सही है या नहीं? आरण्यक ने उस वक़्त असली स्थिति स्पष्ट जान ली। जब कि मंत्री के द्वारा भेजे गये अनुचरों ने यह खबर दी कि जंगली सैनिक कारागार में बन्दी हैं। तब उसने सोचा कि यह करतूत राजा की नहीं, बल्कि मंत्री का षड़यंत्र है और वह राजा का अंत करने की योजना बना रहा है। जब उसका संदेशा पाकर मंत्री उसके पास आया तब आरण्यक को स्पष्ट मालूम हो गया कि मंत्री राजद्रोही है। इसके बाद उसके सामने दूसरा कोई उपाय नहीं था कि मंत्री का वध करके राजा से अपने सैनिक दलों को बचाने की अभ्यर्थना करे और अपने पिता के द्वारा चालू किये रिवाज को पुनः अमल करने की स्वीकृति दे।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

अगस्त्य ऋषि

कहा जाता है कि कई पुराण पुरुषों का जन्म बर्तन-भांडों में हुआ है, उनमें वसिष्ठ और अगस्त्य भी हैं। अगस्त्य ने अनेक वर्षों तक विवाह नहीं किया। एक बार वे जंगल में घूम रहे थे। उन्हें कुछ व्यक्ति औंधे सिर लटकते दिखाई दिये।

अगस्त्य ने उन लोगों से पूछा—"आप लोग इस तरह क्यों लटक रहे हैं?"

उन व्यक्तियों ने उत्तर दिया—"हमारे वंश के अगस्त्य ने संतान पैदा नहीं किया जिस कारण हमें उत्तम गति प्राप्त नहीं हुई। इसलिए हम इस अवस्था में हैं।"

अगस्त्य ने जान लिया कि वे लोग उनके पूर्वज हैं। इसलिए विवाह करके उनका उद्धार करने के ख्याल से अगस्त्य विदर्भ राजा के पास पहुँचे और उनकी पुत्री लोपामुद्रा के साथ विवाह करने की कामना प्रकट की। पर कंद, मूल व फल खानेवाले व्यक्ति के साथ अपनी पुत्री का विवाह करने में राजा ने संकोच किया। पर लोपामुद्रा अगस्त्य के साथ विवाह करने को राजी हो गई।

विवाह के बाद लोपामुद्रा ने अगस्त्य से उत्तम वस्त्र और आभूषणों की माँग की। इस पर वे धन पाने के वास्ते श्रुतपर्व नामक राजा के पास पहुँचे। श्रुतपर्व के पास धन नहीं था। तब वे दोनों प्रद्नश्व नामक राजा के पास पहुँचे। उनके पास भी दान देने को धन नहीं था। इस पर वे तीनों इल्वल नामक राजा के पास पहुँचे।

राजा इल्वल का यह रिवाज था कि वह वातापि नामक व्यक्ति को बकरी के रूप में बदलकर उसका माँस पकवाता और अतिथियों के रूप में आये हुए ब्राह्मणों को खिलाया करता था। वातापि ब्राह्मणों के पेट चीरकर बाहर निकल आता। इस

प्रकार वे दोनों ब्राह्मणों का वध करते थे। इल्वल ने उन्हें बढ़िया भोजन खिलाया। इल्वल और वातापि के इस रहस्य को अगस्त्य जानते थे, इसलिए भोजन के बाद अगस्त्य ने कहा–"जीर्ण जीर्ण वातापि जीर्ण।" फिर क्या था, वातापि हजम हो गया। इल्वल ने प्रकट रूप से कुछ नहीं कहा। पर उनके आगमन का समाचार जानकर उन्हें धन देकर भिजवा दिया।

यह भी कहा जाता है कि कावेरी भी अगस्त्य की पत्नी है। एक बार ब्रह्मा ने अगस्त्य के पास जाकर कहा था कि कवेर नामक राजर्षि की पुत्री कावेरी शिवजी के प्रति तपस्या कर रही है, उसके साथ विवाह करे। अगस्त्य ने मान लिया और कावेरी को अपने कमण्डलु में छिपा लिया।

इसके बाद अगस्त्य विन्ध्याचल को दण्ड देने के लिए चल पड़े। उन्होंने अपना कमण्डलु शिष्यों के हाथ दे दिया। वे लोग कमण्डलु को लेकर सह्य पर्वत तक पहुँचे, तब कावेरी नदी के रूप में बदल गई।

विन्ध्य पर्वत ऊपर बढ़ता जा रहा था जिससे सूर्य और चन्द्रमा की गति में बाधा पड़ती थी। मुनियों ने इसे रोकना चाहा, पर उनकी प्रार्थना विन्ध्याचल ने न सुनी। इस पर मुनियों ने अगस्त्य से विनती की, तब उन्होंने विन्ध्याचल के पास जाकर दक्षिण देश में जाने के लिए रास्ता माँगा। विन्ध्याचल ने अपने विशाल रूप को छोटा कर लिया, तब अगस्त्य ने बताया कि उनके लौटने तक उसी रूप में रहे, लेकिन अगस्त्य दक्षिण जाकर वहीं रह गये।

यह भी कहा जाता है कि अगस्त्य ने समुद्र जल का पान किया है। वह यों हुआ: काल-केय नामक राक्षस मुनियों को तंग किया करते थे। उनका संहार करना देवताओं के लिए भी संभव न हुआ। क्योंकि वे समुद्र में छिप जाते थे। इसलिए देवताओं की सहायता करने के लिए अगस्त्य ने समुद्र का सारा जल पी डाला। तब काल-केय प्रकट हुए। उन्हें देवताओं ने मार डाला।

अपनी बारी

एक गाँव में गुरु प्रसाद नामक एक किशोर था। उसका पिता मर चुका था। उसकी विधवा माँ की बात वह मानता न था। इसलिए नटखट बन बैठा। उसने शादी तो की, पर चोरियाँ करते हुए उसने खूब धन जोड़ा। गुरु प्रसाद की पत्नी ने कई तरह से समझाया कि वह आइंदा चोरी न करे, पर उसने अपनी पत्नी की बात नहीं मानी।

एक बार गुरु प्रसाद चोरी करने गया। तीन दिन बाद लौटकर देखता क्या है, उसने जो कुछ धन जोड़ा था, वह गायब है। उसने अपनी पत्नी से पूछा, तो उसने जवाब दिया—"कल रात मैं गाढ़ी नींद सो रही थी। चोर आकर सारा धन लूट ले गये हैं।"

गुरु प्रसाद को एक साथ क्रोध और दुख भी हुआ। वह अपनी पत्नी को गालियाँ देने लगा। इस पर उसकी पत्नी ने कहा—"तुमने चोरी करके जो कुछ जोड़ा, उसके खोने पर इतने दुखी हो, लेकिन बेचारे जो लोग खूब मेहनत करके धन कमाते हैं, उसकी तुम चोरी करते हो, तब उन लोगों का न मालूम कैसा हाल होगा? वे कितने दुखी होंगे?"

"आइंदा मैं कभी चोरी नहीं करूँगा।" इन शब्दों के साथ उसने क़सम खा ली।

"तुम्हारा धन कहीं नहीं गया है। मैंने ही उसे छिपा रखा है। आज से ही सही, तुम ईमानदारी की जिंदगी जिओ।" पत्नी ने समझाया।

भला-बुरा

श्रीपुर के निवासी मोहनदास ने भले-बुरे का ख्याल किये बिना दोनों हाथ कमाया और वह बहुत बड़ा धनी बन बैठा। उसकी पचास साल की उम्र में उसकी पत्नी का देहांत हुआ। उसके कोई संतान न थी। उसकी सेवा करने के लिए राजनाथ नामक एक युवक को अपने यहाँ नौकर रख लिया।

राजनाथ का गंगा नामक एक युवती से परिचय हुआ। गंगा बड़ी खूबसूरत थी। श्रीपुर की हाट में उन दोनों की मुलाक़ात हुआ करती थी।

एक दिन राजनाथ को साथ लेकर मोहनदास हाट में गया। वहाँ पर राजनाथ को गंगा ने देखा और देर तक उसके साथ बातचीत करती रही। मोहनदास ने राजनाथ से पूछा—"अरे, वह सुंदर लड़की कौन है?"

राजनाथ ने बताया—"मालिक! वह लड़की जमालपुर की है, उसका बाप रंगनाथ है।"

गंगा को देखने के बाद मोहनदास के मन में यह विचार आया कि उसके साथ शादी करके फिर से अपनी उजड़ी गृहस्थी को बसा लेनी है। उसने एक नाई को बुलाकर रंगनाथ के पास यह संदेशा भेजा। रंगनाथ ने सोचा कि अपनी बेटी की शादी एक अमीर के साथ करने पर वह सुखी बन जाएगी, उसने अपनी लड़की के इनकार करने पर भी शादी के खर्च के लिए मोहनदास से रुपये लेकर मुहूर्त भी निश्चित कराया।

यह खबर मिलते ही गंगा के साथ शादी करने की तीव्र इच्छा रखनेवाला राजनाथ हताश हो गया। जमालपुर में रामनाथ और सोमनाथ नामक उसके दो

रामकृष्ण वर्मा

दोस्त थे। वे गाँवों में जाकर नाटक खेला करते थे। राजनाथ ने अपना दुखड़ा सुनाकर मदद करने की विनती की। वे भी सोचने लगे कि किस तरह वे अपने दोस्त की मदद कर सकते हैं।

मुहूर्त के पिछले दिन ही मोहनदास अपने नौकर राजनाथ को साथ ले जमालपुर पहुँचा और उस गाँव की एक पाठशाला में ठहर गया।

उस दिन शाम को उस गाँव की एक संपन्न परिवार की बड़ी बूढ़ी का देहांत हो गया था। गाँववाले सब दुखी थे। इस कारण मोहनदास की शादी को रोकने के लिए रामनाथ और सोमनाथ को एक अच्छा मौक़ा मिल गया।

आधी रात के वक़्त रामनाथ ने यमराज के रूप में और सोमनाथ ने यम किंकर का वेष बनाया। रामनाथ एक भैंसे पर सवार हो गया। वे दोनों गाँव की पाठशाला की ओर बढ़े। पाठशाला के सामने रुककर यमराज ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"अरे भल्लूक मुष्ठी! इस बूढ़ी की जान कैसी कठोर है! देखो न फंदे में फँसकर कैसे उछल रही है?"

"जी हाँ, महाराज! आप आ गये, अच्छा हुआ, वरना उसकी जान को फंदे में कसना मेरे वश की बात नहीं है।" यम किंकर ने जवाब दिया।

यह बातचीत सुनकर मोहनदास अचरज में आ गया और उसने खिड़की खोलकर

बाहर देखा और यमराज तथा उनके सेवक को देख वह अवाक् रह गया।

यमराज ने मोहनदास को देखा, तब अपने सेवक से कहा–"ओह, यह तो श्रीपुर का निवासी मोहनदास है न? इसकी आयु अब सिर्फ़ एक हफ़्ते तक की है। ठीक वक़्त पर पहुँचकर इसको फंदे में फँसाना मत भूलो।"

"जी हाँ, मालिक!" यम किंकर ने जवाब दिया। इसके बाद वे दोनों अंधेरे में आगे निकल गये।

उनकी बातचीत सुनकर मोहनदास चकित रह गया। उसने राजनाथ से कहा–"अरे, तुमने इन लोगों की बातें सुन ली हैं न? ये क्या सचमुच यमराज और उनके दूत ही हैं?"

"क्या कहा मालिक? यमराज के दूत? वे लोग तो मुझे दिखाई नहीं दिये!" राजनाथ ने आश्चर्य में आकर पूछा।

इसके बाद उस दिन रात को मोहनदास को नींद नहीं आई। वह तो एक हफ़्ते में मरनेवाला जो है! सवेरा होने पर विवाह-वेदी पर क्यों बैठे? एक भोली भाली लड़की की ज़िंदगी बरबाद क्यों करे?

यों विचार कर मोहनदास दूसरे दिन सवेरे विवाह-वेदी पर नहीं बैठा। उसने रंगनाथ को समझाया–"रंगनाथ! तुम अपनी बेटी की शादी हमारे राजनाथ के साथ कर दो।"

"वाह! मजाक़ की भी हद होती है, साहब! जान-बूझकर मैं अपनी लड़की की शादी एक कंगाल के साथ कर दूं?" रंगनाथ ने तैश में आकर कहा।

"राजनाथ कंगाल कैसा? वह मेरी सारी जायदाद का वारिस जो है! तुम चाहोगे तो मैं सारी जायदाद उसी के नाम लिख दूंगा।" मोहनदास ने कहा।

इसके बाद गंगा की शादी राजनाथ के साथ हो गई।

मोहनदास ने यमदूतों की प्रतीक्षा की, मगर उसकी जान ले जाने के लिए कोई नहीं आया।

चतुर व्यापारी

मोतीलाल बड़ा ही चतुर था। वह रोज लक्ष्मी की पूजा किया करता था। लक्ष्मी की उस पर कृपा थी। एक बार लक्ष्मी देवी व्यापारी पर किसी कारण से अप्रसन्न हो गईं। उन्होंने सपने में मोतीलाल को दर्शन देकर बताया कि वह व्यापारी के घर छोड़कर चली जा रही हैं।

व्यापारी ने गिड़गिड़ाकर लक्ष्मी देवी से निवेदन किया कि वे ऐसा न करें। आख़िर व्यापारी ने लाचार होकर कहा–"माताजी! मैं कई दिनों से आप की महापूजा कराने की बात सोच रहा था। कम से कम उस पूजा के समाप्त होने तक तो रह जाइये।"

"अच्छी बात है! तुम्हारी महापूजा के समाप्त होने तक कहीं नहीं जाऊँगी।" लक्ष्मी देवी ने महापूजा पाने के लोभ में व्यापारी की बात मान ली।

फिर क्या था, दूसरे दिन से व्यापारी ने साधारण पूजा तक करना बंद किया। दिन और हफ़्ते बीतते गये, लक्ष्मी देवी को क्रोध आया। उन्होंने सपने में दर्शन देकर व्यापारी से कहा–"तुम महापूजा कब कराने जा रहे हो? मैं आज ही तुम्हारे घर से चली जा रही हूँ।"

"माताजी, आप ने वचन दिया है कि महापूजा के समाप्त होने तक नहीं जायेंगी।" व्यापारी ने कहा। लक्ष्मी देवी समझ गईं कि व्यापारी इस जन्म में महापूजा नहीं करेगा। इसलिए बोलीं–"तब तो साधारण पूजा तो करो।" ये शब्द कहकर अदृश्य हो गईं।

बुद्धू

एक गाँव में मोहिंदर और जोगीन्दर नामक दो श्रमजीवी थे। उन्हें सभी लोग बुद्धू कहकर पुकारा करते थे। एक बार मोहिंदर ने गाँव के मुखिये से मिलकर पूछा—"साहब, मुझे सभी लोग बुद्धू बताते हैं। क्या यह बात सच है?"

"तुम से मैं एक सवाल पूछता हूँ। इसका जवाब दो। मेरे परिवार में चार आदमी हैं। एक तो मेरी पत्नी है, दूसरी मेरी बेटी, तीसरा मेरा पुत्र और चौथा कौन है?" मुखिये ने पूछा।

"आप बतायेंगे तो तभी न मुझे मालूम होगा?" मोहिन्दर ने उत्तर दिया।

"अरे बुद्धू! चौथा आदमी मैं हूँ।" मुखिये ने कहा।

इसके बाद मोहिन्दर ने जोगिन्दर से यही प्रश्न पूछने का विचार करके कहा—"जोगीन्दर! मैं तुम से एक सवाल पूछता हूँ। इसका जवाब दो। मेरे परिवार में चार आदमी हैं। एक तो मेरी पत्नी है, दूसरी मेरी पुत्री है, तीसरा मेरा पुत्र है, अब बताओ, चौथा कौन है?"

"अबे, तुम्हीं हो!" जोगीन्दर ने कहा।

"अरे बुद्धू! चौथा तो हमारे गाँव के मुखिये न?" मोहिन्दर ने झट से उत्तर दिया।

वामन-बली

प्रह्लाद का पोता बली महान शूर-वीर थे। वे सारे भूमण्डल पर विजय प्राप्त कर महान चक्रवर्ती बने। फिर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ।

इसलिए बली ने स्वर्ग पर हमला किया। देवता उनके सामने टिक न पाये। उनके सामने दो ही मार्ग थे, या तो बली के दास बनकर रह जाये, या स्वर्ग को छोड़ चले जाये।

देवता कोई निर्णय नहीं कर पाये। उन लोगों ने श्री महाविष्णु के पास जाकर अपना हाल सुनाया। बली महान वीर तो थे ही, साथ ही उदार और सत्य प्रेमी थे। यह बात श्री महाविष्णु जानते थे। इसलिए अन्य राक्षसों की भांति बली को हराना संभव न था।

इस पर विष्णु कश्यप के द्वारा अदिति के गर्भ में पैदा हुए। वे नाटे बनकर वामन के नाम से प्रसिद्ध हुए। वेद और वेदांगों का अध्ययन कर ब्राह्मणोत्तम कहलाये।

बली ने एक महायज्ञ किया। उसमें सैकड़ों ब्राह्मणों ने ऋत्वक के रूप में काम किया। उस वक्त बली ने घोषणा की कि याचक जो भी वस्तु माँगे, दी जाएगी।

सब ने बली के यहाँ से अपनी इच्छा प्रकट कर दान प्राप्त किये। तब वामन की बारी आई। वामन ने बली से तीन क़दम ज़मीन माँगी। बली ने मान लिया और वामन की कामना की पूर्ति करने को हुए।

इस पर बली के गुरु शुक्राचार्य ने जान लिया कि वामन और कोई नहीं, बल्कि विष्णु हैं। इसलिए बली को दूर ले जाकर वामन ने जो दान माँगा, उसे न देने की सलाह दी।

मगर बली अपना वचन भंग करनेवाले न थे। इसलिए शुक्राचार्य छोटे कीड़े के रूप में जलपात्र की नली में बाधा डालने लगे, इसलिए पात्र से जल न निकला।

वामन ने बली को सलाह दी कि नली में दाभ घुसेड़ दे, बली ने वैसा ही किया। इस पर शुक्राचार्य ने बाहर निकलकर अपने वास्तविक रूप को प्राप्त किया, मगर उनकी एक आँख जाती रही।

बली ने तीन क़दम जमीन दान दी। वामन ने विशाल रूप धारण कर एक क़दम से पृथ्वी को और दूसरे क़दम से आकाश को नाप लिया।

इसे देख बली विस्मय में आ गये। वामन ने बली से पूछा कि वे अपना तीसरा क़दम कहाँ रखे? बली ने उन्हें अपना सर दिखाया। इस पर वामन ने अपने पैर से बली को पाताल में धंसा दिया। इस प्रकार एक बौने के हाथ में महान शूर पराजित हो गये।
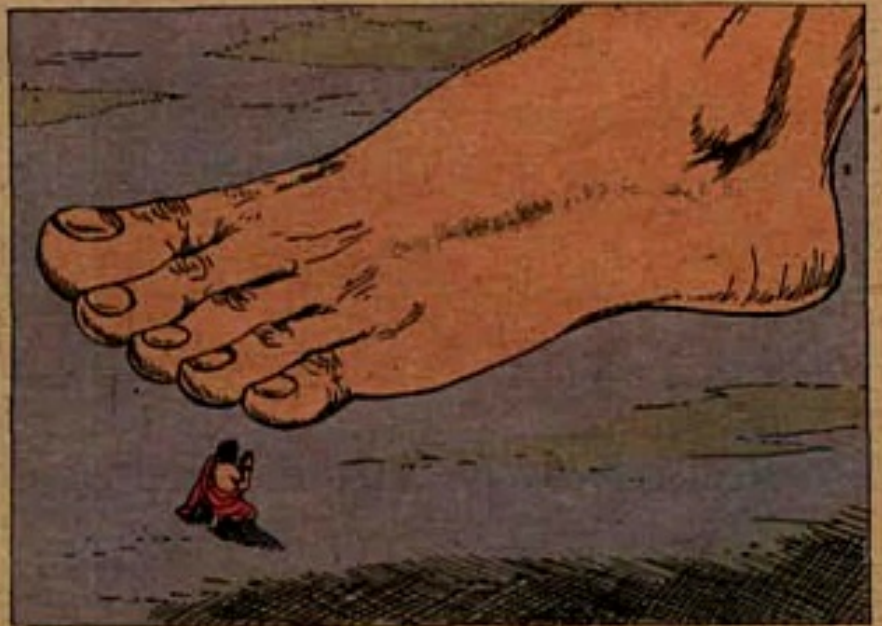
बली की पत्नी विद्यावली ने वामन से प्रार्थना की कि वे उसके पति के साथ अन्याय न करे। इस पर विष्णु ने बताया कि बली का आदेश कभी व्यर्थ नहीं जाता, पर उनके दर्वाजे पर वे ही स्वयं पहरा देंगे।
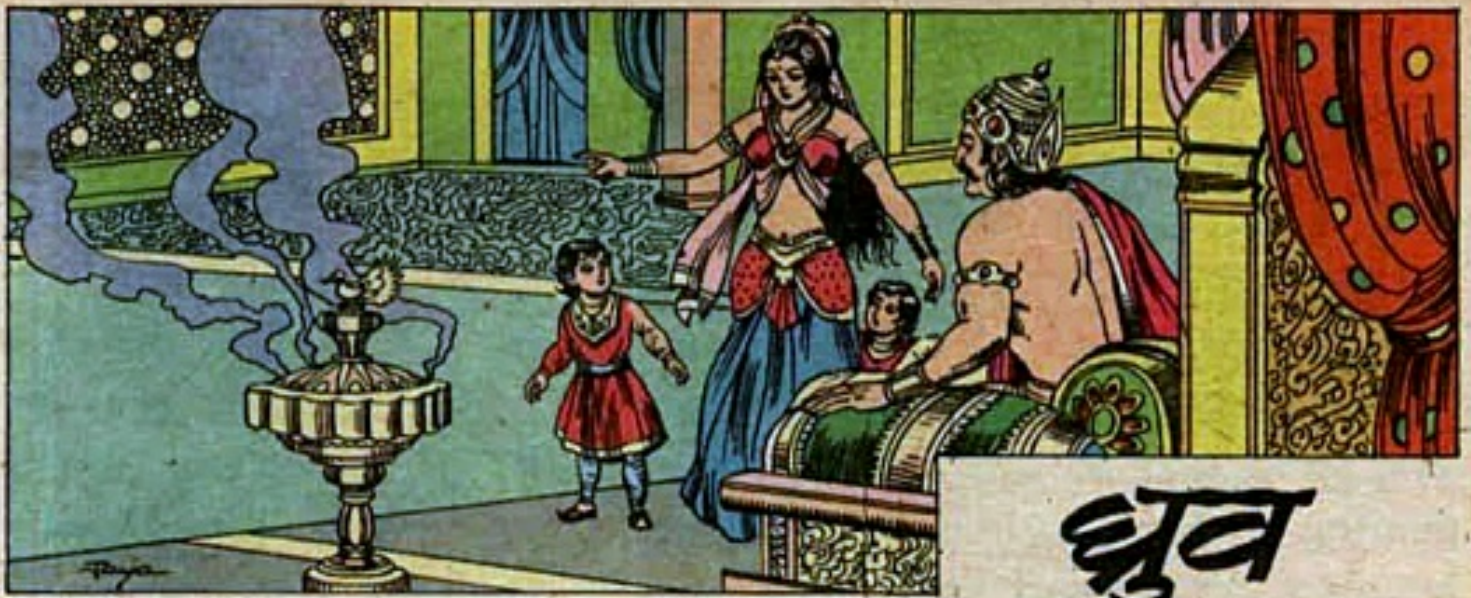
ध्रुव

प्रथम मनु स्वायंभु के अनंता नामक पत्नी के द्वारा उत्तानपाद नामक एक पुत्र हुआ। उसके दो पत्नियाँ थीं। बड़ी पत्नी सुनीता का पुत्र ध्रुव था। दूसरी पत्नी सुरुचि का पुत्र उत्तम।

उत्तानपाद अपनी छोटी रानी सुरुचि को अधिक चाहते थे। इस कारण वे सुरुचि के प्रत्येक कार्य का समर्थन करते थे।

एक बार बालक ध्रुव आकर अपने पिता की जांघ पर बैठ गया। इसे देख सुरुचि ने ध्रुव को डांटकर बताया–"तुम्हें अपने पिता की जांघ पर बैठने का हक़ नहीं है। यह हक़ केवल मेरे पुत्र उत्तम को ही है। यदि तुम अपने पिता की जांघ पर बैठना चाहते हो तो तुम्हें मेरे गर्भ से पैदा होना था। उठ! चल!" यों कहकर सुरुचि ने ध्रुव को उत्तानपाद की जांघ पर से खींचकर हटा दिया।

इसे देखकर भी उत्तानपाद ने सुरुचि को नहीं डांटा, बल्कि वे मौन रह गये।

ध्रुव को यह बात अपमानजनक प्रतीत हुई, उसे अपनी विमाता पर बड़ा क्रोध आया। उसने अपनी माँ के पास जाकर यह बात बताई। मगर वह अपने पति के प्रेम को प्राप्त करने में सुरुचि के सामने असहाय थी।

ध्रुव ने समझ लिया कि उसके पिता के घर में उसका कोई स्थान नहीं है। इस पर वह अपनी माता की अनुमति लेकर तपस्या करने जंगल में चला गया। वहाँ पर वह सप्तर्षियों से मिला और उनके द्वारा तपस्या करने की रीति जान ली। उसने श्री महा विष्णु के प्रति बड़ी तपस्या की। विष्णु ने प्रत्यक्ष होकर उसे कई वरदान दिये। ध्रुव अत्यंत आनंदित हो घर लौटा। उत्तानपाद को जब मालूम हुआ कि

उनका पुत्र ध्रुव विष्णु के द्वारा अनेक वर प्राप्त करके लौट आया है, तब वे बहुत प्रसन्न हुए और ध्रुव का राज्याभिषेक करके वे तपस्या करने जंगलों में चले गये। इस प्रकार ध्रुव अपने पिता का मुख्य पुत्र कहलाया।

ध्रुव का छोटा भाई विवाह करके अपने पिता की वंश लता को आगे बढ़ाये बिना हिमालयों में शिकार खेलते यक्षों के हाथ मार डाला गया। इस पर ध्रुव ने नाराज़ होकर कुबेर की नगरी अलकापुरी पर आक्रमण किया और यक्षों का वध करने लगा। तब कुबेर ने ध्रुव के साथ संधि करके यक्षों को बचाया।

ध्रुव के अनेक पत्नियाँ थीं। उनके द्वारा उसने कई पुत्रों को जन्म देकर अपने पिता के वंश को आगे बढ़ाया।

ध्रुव की पत्नियों में धन्या एक थी। उसके द्वारा शिष्ट नामक एक पुत्र हुआ। ध्रुव की पत्नियों में शिशुमार नामक राजा की पुत्री भ्रमी एक थी। उसके पुत्र कल्प और वत्सर थे। वायु की पुत्री इला भी ध्रुव की एक पत्नी थी। उसके गर्भ से उत्कल पैदा हुआ। शंभुवु नामक एक पत्नी के द्वारा ध्रुव के भव्य और श्लिष्टी नामक दो पुत्र हुए। इन पत्नियों के अलावा ध्रुव के एक विचित्र पत्नी थी। वह उसकी छाया थी। उस छाया को ध्रुव ने नारी बन जाने का आदेश दिया। कहा जाता है कि छाया ने नारी बनकर ध्रुव के साथ विवाह करके पाँच पुत्रों का जन्म दिया था।

यह भी कहा जाता है कि पूर्व जन्म में ध्रुव एक ब्राह्मण था। उस समय एक राजा के साथ उसकी मैत्री थी। इस कारण उसके मन में राज्य शासन करने की कामना पैदा हुई। परिणाम स्वरूप दूसरे जन्म में क्षत्रिय बनकर उसने शासन किया था।

इसके बाद विष्णु के अनुग्रह से ध्रुव नक्षत्र बनकर आज भी उत्तरी दिशा में प्रकाशमान है।

बुद्धिमानी का सवाल

शिवगंगा के राजा के दरबार में एक बार विद्यासागर नामक एक पंडित ने प्रवेश करके चुनौती दी कि उसे जो दरबारी पंडित हराएगा, उसे वह अपना स्वर्ण कंगण पुरस्कार के रूप में देगा। पर सभी दरबारी पंडितों ने उसके सामने हार मान ली। इस बार दरबारी विदूषक ने कहा–"पंडितजी! मैं आप से पाँच सवाल पूछूंगा। आप को उनके गलत उत्तर देने होंगे। सही जवाब देने पर आप हार जायेंगे।"

विद्यासागर ने विदूषक की शर्त मान ली और वह गलत उत्तर देने लगा। "आप परदेशी हैं न?" इस सवाल का उत्तर दिया–"नहीं, मैं आप ही के देश का निवासी हूँ।" "क्या अब आप अपने ही देश में हैं?" "जी हाँ!" पंडित ने उत्तर दिया। "आप के पास स्वर्ण कंगन है न?" "नहीं" तो "हमारे राजा का नाम महीपाल है न?" "नहीं"

इस पर विदूषक ने कोई बात भूलने का अभिनय करते हुए पूछा–"अब तक कितने सवाल हुए?" विद्यासागर ने कहा–"चार! पाँचवाँ सवाल पूछिये।"

"आप मेरे पाँचवें सवाल का सही जवाब देकर हार गये।" विदूषक ने झट कह दिया।

जादू के नींबू

प्राचीन काल में चीन देश के पीकिंग नगर में एक दर्जी रहा करता था। उसका नाम चिंग था। चिंग का पिता भी एक दर्जी ही था। वह मरते वक़्त चिंग के वास्ते सिर्फ़ एक सिलाई मशीन छोड़ गया था। चिंग अपने पिता जैसे ग्राहकों को संतुष्ट किया करता था। इस तरह धन कमाकर जल्द ही उसने सिलाई की चार और मशीनें ख़रीदीं और चार लोगों की जीविका का इंतज़ाम भी किया।

मगर चिंग की वजह से उसी गली में रहनेवाले दस दर्जियों का काम जाता रहा। क्योंकि वे कभी वक़्त पर ग्राहकों को कपड़े सीकर देते न थे। ग्राहक आखिर ऊबकर चिंग के पास पहुँच जाते। चिंग वक़्त पर कपड़े सीकर उन्हें संतुष्ट किया करता था। इस कारण सब लोग उसी की दूकान में जाते थे। इस तरह और दर्जियों की माँग जाती रही।

चिंग के कारण जिन दर्जियों का काम छूट गया था, उन सब ने मिलकर चिंग के विनाश की योजना बनाई। उनमें वांग नामक एक दर्जी था। उसने सलाह दी कि ओझा के जरिये चिंग पर मंत्र फुंकवा दिया जाय तो, उसका सर्वनाश हो जाएगा, तब बाक़ी दर्जियों के पास लोग झक मारकर पहुँच जायेंगे। यों विचार कर सभी लोग एक ओझा के घर पहुँचे। मगर ओझा के घर पर ताला लगा था। क्योंकि वह किसी गाँव में गया था। इसलिए सभी दर्जी लाचार होकर अपने अपने घर चले गये।

दूसरे दिन वांग की दूकान में कोई ओझा जैसा एक आदमी आ पहुँचा। उसने पूछा—"मैंने सुना है कि कल किसी ने मेरे गुरुजी की याद की है। उन्होंने मुझे

रजनी अग्रवाल

आप लोगों के पास भेजा है। किसी भूत का मारण होम करने में लगा हुआ था, इसलिए वक़्त पर पहुँच नहीं पाया। बताइये, बात क्या है? उस व्यक्ति की बेष-भूषा देखने पर वांग को लगा कि यह सचमुच भूत-वैद्य है। वांग ने उसे सारी बातें बताईं।

इस पर ओझा के शिष्य ने पूछा– "इसके वास्ते भूत का आवाहन करना होगा, थोड़ा-बहुत खर्च होगा। क्या तुम उसका खर्चा उठा सकते हो?"

"हम लोग कुल दस आदमी हैं। खर्चा बांट लेंगे।" वांग ने जवाब दिया।

"मैं तुम्हें जादू का एक नींबू दूंगा। उसके भीतर सोने का एक सिक्का रखकर चिंग की दूकान में डाल दो। तब तुम्हें उसका पिंड छूट जाएगा।" यों समझाकर ओझा के शिष्य ने वांग के हाथ में एक फाड़ा हुआ नींबू रख दिया।

वांग के पास सोने का सिक्का न था। फिर भी उसने अपनी सारी चीज़ें बेचकर एक सोने का सिक्का कमाया, उसे नींबू के भीतर रखकर चिंग की दूकान में पहुँचा। चिंग के साथ बातचीत करते हुए धीरे से नींबू को एक जगह सरका दिया और तब अपने घर चला गया।

इस बीच ओझा के शिष्य भूत-वैद्य ने बाक़ी दर्जियों के पास पहुँचकर उन्हें भी

नींबू दिये और उनके भीतर भी सोने के सिक्के रखकर चिंग की दूकान में छोड़ आने की सलाह दी। सबने वैसा ही किया।

दिन बीतने लगे, पर चिंग का पतन नहीं हुआ। उल्टे उसने दस और सिलाई की मशीनें खरीदीं।

इसे देखने पर दर्जी हताश हो गये। तब सबने ओझा के घर जाकर पूछा– "महाशय, आप का शिष्य कहाँ रहता है?"

ओझा ने आश्चर्य में आकर कहा–"मेरे कोई शिष्य नहीं हैं। मैं ही खुद इस पेशे के जरिये अपना पेट पालने में असमर्थ हूँ।"

वांग पशोपेश में पड़ गया। इस बीच चिंग ने अपनी गली के सभी दर्जियों को

अपनी नई दूकान देखने के लिए निमंत्रण भेजा। उसकी उन्नति का रहस्य जानने सभी दर्जी चिग की दूकान पहुँचे। चिग ने सब को बढ़िया आतिथ्य दिया।

वांग अपने कुतूहल को रोक न पाया। उसने पूछा—"भाई चिग! अचानक तुम्हारे पास इतनी सारी संपत्ति कैसे आ गई?"

"किसी भाग्य की देवी ने मेरी दूकान में दस नींबू और दस सोने के सिक्के भिजवा दिये हैं। नींबू से शरबत बनाकर पिया तो मुझे अपार ताक़त प्राप्त हुई। सोने से नई मशीनें खरीदकर दूकान को बड़ा किया।" चिग ने उत्तर दिया।

दर्जियों ने रोनी सूरतें बनाकर कहा—"वे सोने के सिक्के हमारे ही हैं। हम लोगों ने तुम्हारा दीवाला निकलवाना चाहा, इसके वास्ते हमने अपना सब कुछ बेच-बाचकर सोने के सिक्के खरीदे, उसके जरिये हमने अपनी सारी दरिद्रता तुम्हारे सिर लादनी चाही। मगर हमारी कोशिश बेकार गई।" चिंग ने मुस्कुराकर कहा—"ओह, ऐसी बात है? यह बात मैं बिलकुल नहीं जानता हूँ, भाई।"

इस पर सारे दर्जी रो पड़े। चिंग ने बड़े ही स्नेह भाव से उन्हें समझाया—"मैंने सिलाई की नई मशीनें खरीदी हैं। उन पर काम करने के लिए मुझे दस दर्जियों की ज़रूरत है। तुम में से कोई भी आकर यहाँ काम करे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तुम लोग जितना काम करोगे, उतना धन तुम्हारा होगा।"

इसके बाद सभी दर्जियों ने चिंग के यहाँ काम करने को मान लिया और उसी दिन सबने अपना काम शुरू किया।

जिस दिन दस दर्जियों ने चिंग को बरबाद करने की योजना बनाई थी, उस दिन ओट में रहकर चिंग ने उनकी सारी बातें सुन लीं और उसने ओझा के शिष्य के रूप में उनकी योजना विफल बनाई। पर उसने अपनी जिंदगी-भर इस रहस्य को गुप्त ही रखा।

मंदिर में शादी

गोविद मिश्र की आखिरी कन्या की शादी पक्की हो गई। मंदिर में शादी करने के लिए सब ने मान लिना। मगर किस मंदिर में की जाय, इस पर मत भेद हुआ। गोविद मिश्र ने अपने ही गाँव के बालाजी के मंदिर में शादी करने पर जोर दिया। उनका बड़ा पुत्र हनुमानजी का उपासक था। उसने हनुमान के मंदिर में शादी करने की सलाह दी। गोविंद के दूसरे पुत्र ने राम मंदिर में शादी करने का हठ किया। मिश्रजी की बड़ी पुत्री ने सलाह दी कि सभी देवताओं के आदि देव विघ्नेश्वर हैं, इसलिए विनायक के मंदिर में शादी करने की सलाह दी।

यह वाद-विवाद देख दुलहिन ने सलाह दी—"लग्न निश्चित करनेवाले पुरोहितजी से पूछिये, किस मंदिर में शादी करना उचित होगा।"

सब के विचार सुनने के बाद पुरोहित ने कहा—"किसी भी मंदिर में शादी करना उचित नहीं है। बालाजी के तो दो पत्नियाँ हैं, हनुमानजी तो ब्रह्मचारी हैं। विघ्नेश्वर के संबंध में दो मत हैं। कोई उन्हें ब्रह्मचारी बताते हैं तो कोई उनकी दो पत्नियाँ मानते हैं। रामचन्द्रजी तो सब से उत्तम व्यक्ति हैं, लेकिन आप जानते हैं, उनके साथ विवाह करके सीताजी ने कैसी यातनाएँ भोगी हैं। इसलिए आप के घर पर ही शादी कीजिए। यही उत्तम उपाय है।"

बड़े का बड़प्पन

लोग कहा करते थे कि विशाल देश के रूपवर नामक गाँव में कई बड़े लोग निवास किया करते हैं। वहाँ पर अनेक संगीत के विद्वान, महान कवि, अभिनेता, चित्रकार व शिल्पी रहा करते हैं। वे लोग अपनी सारी कमाई अपने देश के गरीबों के उपयोग में लगा देते हैं।

विशाल देश के राजा विजयसेन ने रूपवर गाँव के बड़े लोगों के बारे में सुन रखा था। उस गाँव के सब से महान व्यक्ति का पता लगाने के लिए राजा ने अपने मंत्री, सेनापति, पुरोहित, कोशाध्यक्ष और कुछ प्रमुख व्यक्तियों को भेजा। पर कोई यह नहीं बता सका कि सबसे महान व्यक्ति कौन है?. अंत में राजा अपना वेष बदलकर पहुँचे। वे भी पता नहीं लगा पाये।

उन्हीं दिनों में चिरंजीवी नामक एक महाज्ञानी पुरुष उस देश में आये। राजा ने चिरंजीवी को अपने महल में बुला भेजा। उनके सामने अपनी समस्या रखी।

चिरंजीवी ने राजा को आश्वासन दिया कि वे रूपवर ग्राम में जाकर सब से महान व्यक्ति का पता लगायेंगे; यह कहकर चिरंजीवी उस गाँव की ओर चल पड़े।

माधव नामक एक व्यक्ति गाँव की सीमा पर ही चिरंजीवी से मिला। उसने कहा–"आप क्या मेरे गाँव के बड़े व्यक्तियों को देखने आ रहे हैं? मैं एक एक बड़े व्यक्ति को दिखाने के लिए एक एक सोने का सिक्का लूँगा। यदि आप मेरी शर्त को मानते हैं तो मेरे साथ चल सकते हैं।"

यह बात राजा के द्वारा चिरंजीवी ने पहले ही सुन रखी थी, इसलिए वे आश्चर्य में नहीं आये। माधव ने एक ही दिन में चिरंजीवी को साठ बड़े लोगों का परिचय कराकर साठ सोने के सिक्के कमाये।

चिरंजीवी ने जिन बड़े लोगों को देखा, उन लोगों ने चिरंजीवी को अपने अपने द्वारा किये गये महान कार्यों का परिचय दिया। देश में आर्थिक दृष्टि से कठिनाइयों का अनुभव करनेवालों के वास्ते उनके द्वारा समुचित प्रबंध किये गये थे। इसके बाद माधव ने कहा–"महानुभाव, मैं कल आपको और अनेक लोगों का परिचय कराऊँगा।"

इस पर चिरंजीवी ने कहा–"ऐसे महान व्यक्तियों के निवास करनेवाले गाँव में उनका परिचय कराने के लिए हर एक व्यक्ति के पीछे एक सोने का सिक्का वसूलने वाले तुम जैसे लोगों का भी रहना मेरे लिए चिंता की बात मालूम होती है।"

इस पर माधव ने सारे सिक्के चिरंजीवी के हाथ देकर कहा–"मैंने सोचा था कि आप यह धन खुशी से दे रहे हैं। यदि आप दुखी होकर दे रहे हैं तो इस धन की मुझे ज़रूरत नहीं है। आप प्रसन्नतापूर्वक जो भी देना चाहते हैं, सो दे दीजिए।"

चिरंजीवी ने आश्चर्य में आकर कहा–"यह भी खूब है। पर मैं जानना चाहता हूँ कि धन के प्रति आप का यह लोभ क्यों? आप यह धन क्या करनेवाले हैं?"

"इससे आप का क्या मतलब है? मैं अगर सच्ची बात बताऊँ तो क्या उसे सुलझा सकते हैं?" माधव ने पूछा।

"मैं सुलझा सकता हूँ।" चिरंजीवी ने कहा।

"तब तो मेरे साथ चलिए।" यों कहकर माधव चिरंजीवी को गाँव के बाहर उन झोंपड़ियों के पास ले गया, जिनमें बड़ा निकृष्ट जीवन बितानेवाले लोग थे।

"ये लोग कौन हैं?" चिरंजीवी ने पूछा।

माधव ने कहा–"पच्चीस साल पहले यह गाँव पूर्ण रूप से उपेक्षित था। उन दिनों में हमारे गाँव में एक सन्यासी आये। इन लोगों ने उनका अपमान किया। उस सन्यासी ने इन्हें शाप दिया कि इनका जीवन निकृष्ट हो जाय और जो लोग

इनकी सहायता करे, उनका सर्वनाश हो जाय! इस पर गाँववाले डर गये। उन लोगों ने सन्यासी से प्रार्थना की कि उन्हें क्षमा करें। तब सन्यासी ने बताया कि यदि कोई अपने गाँव को त्यागे बिना सोने के सिक्के कमाकर उन्हें प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक हज़ार सोने के सिक्के दे सके तो ये लोग फिर से सुखमय जीवन बिता सकते हैं। अब कृपया आप ही बताइये कि कितने सोने के सिक्के कमाने पर इनमें से प्रत्येक व्यक्ति के वास्ते एक हज़ार सिक्के जमा हो सकते हैं?"

"क्या तुम्हें इस बात का डर नहीं है कि इनकी मदद करने पर तुम्हारा सर्वनाश हो जाएगा?" चिरंजीवी ने पूछा।

"इसीलिए मैंने विवाह नहीं किया। रात को किसी पेड़ के नीचे सो जाता हूँ। सर्वनाश हो जाने के लिए मेरे पास है ही क्या? मैंने अब तक अपनी कमाई के द्वारा पाँच लोगों को सुखमय जीवन पहुँचा दिया है। अब देखना है कि और कितने लोगों को यह मौक़ा दिला सकता हूँ।" माधव ने जवाब दिया। इसके बाद चिरंजीवी ने राजा विजयसेन के पास लौटकर अपना सारा अनुभव उन्हें सुनाया और सलाह दी–"आप तत्काल माधव के लिए आवश्यक धन भिजवा दीजिए। मेरा विचार है कि उस गाँव में सब से बड़ा महान व्यक्ति वही है।"

"क्या इसलिए आप माधव को महान व्यक्ति मानते हैं कि वह दीन जनों का उद्धार कर रहे हैं?" राजा ने पूछा।

"नहीं, महान व्यक्ति का बड़प्पन इसी में है कि वह अपने मुँह से अपने बड़प्पन का बखान किये बिना दूसरों के मुँह से कहलवा ले। माधव गाँव भर के लोगों के बड़प्पन की प्रशंसा करते एक महान कार्य के हेतु अनवरत श्रम कर रहे हैं तो उनकी महानता को न पहचाननेवाले वे ग्रामवासी माधव से महान कैसे हो सकते हैं?" चिरंजीवी ने समझाया।

चिरंजीवी का उत्तर पाकर राजा बहुत खुश हुए और उनका सत्कार किया।

असभ्य कौन है?

प्राचीन काल में मिश्र देश पर मेहर नामक एक महान सुलतान राज्य करता था। उसके मन में अपने राज्य का विस्तार करने की कामना पैदा हुई। इस इच्छा की पूर्ति के लिए उसने चारों ओर के राज्यों पर हमला करके अपने राज्य में मिलाकर उनके द्वारा राजस्व वसूल करते हुए चक्रवर्ती कहलाना चाहा। फिर क्या था, खजाने का सारा धन लगाकर भारी सेना इकट्ठी की और अपनी विजय यात्रा शुरू की।

कुछ पड़ोसी राज्यों के राजाओं ने, जो वीर थे, हिम्मत के साथ मेहर का सामना किया। मगर समुद्र की लहरों की भांति बढ़ी आनेवाली मिश्र की सेनाओं के सामने उनका पौरुष काम न आया। उन महा वीरों को युद्ध में अपने प्राण त्यागने पड़े। कुछ राजाओं ने सोचा कि सुलतान मेहर का सामना करना बेकार है, इसलिए वे कर देने को राजी हो गये।

राज्यों पर विजय प्राप्त करने के साथ साथ सुलतान मेहर की राज्य-लिप्सा भी बढ़ती गई। नये रूप से जो राज्य उसके अधीन हुए, उन राज्यों के ख़ज़ाने लूटकर मेहर ने नई सेनाएँ इकट्ठी कीं और नये राज्यों पर हमला करना प्रारंभ किया। इस प्रकार जबर्दस्ती के शिकार हुए राज्यों में "षिकांग" नामक देश भी एक था।

षिकांग देश पहाड़ों और जंगलों से भरा था। घमण्ड में आकर मेहर ने उस देश को भी घेर लिया। षिकांग राजा के अनुचर हमारे देश के भील जैसे जंगली थे। वे किसी पेड़ और बांबी के पीछे ताक में बैठे रहते और अपने जहर बुझे बाणों का प्रयोग करके मेहर की फौज के प्राण लेने लगे। रात के वक़्त मेहर के

अधिकार कर लिया। अब हमें अपने हमले बंद करना मुनासिब होगा। जिन देशों पर हमने अधिकार कर लिया, उन्हें बचा ले तो वह बहुत बड़ी बात होगी।"

मगर मेहर ने दृढ़ स्वर में कहा–"हमें इस षिकांग राज्य पर अधिकार कर लेना है। इतने सारे राज्यों पर अधिकार करने के बाद एक पहाड़ी राजा के सामने झुक जाय, यह कैसे हो सकता है?" मेहर ने कहा।

मेहर की आज्ञा पत्थर की लकीर थी। अपार धन खर्च करके नई फौज बुलाई गई। मेहर के मन में सिर्फ़ उस पहाड़ी राजा के घमण्ड को तोड़ने का हठ था, मगर उसके मन में यह बात नहीं सूझी कि केवल पत्थर, कंकड़ व कंटीली झाड़ियोंवाले उन जंगलों व पहाड़ों पर अधिकार करने से फ़ायदा ही क्या है?

इसी हठ और ज़िद को लेकर मेहर ने अपने सिपाहियों को उकसाया–"तुम लोगों में जो सिपाही षिकांग के राजा बेट्सू को प्राणों के साथ या उसकी लाश को भी लाकर मेरे सामने रखेगा, उसे एक हज़ार मुहर इनाम दिये जायेंगे।"

फिर क्या था, मेहर के सैनिक जोश में आकर जंगलों में घुस गये और जो भी भील वीर आँखों में पड़ता उसका वध करने लगे। हर एक भील मेहर के दस

सैनिक अगर ग़फ़लत की नींद सोते तो वे जंगली दल बांधकर चुपके से पहाड़ उतर आते और मेहर के सैनिकों का वध करके उनकी लाशों के ढेर लगाकर भाग जाते।

इस पर प्रधान सेनापति ने सुलतान को समझाया–"जहाँपनाह! हमें पिकांग पर हमला करना छोड़कर वापस लौट जाना सब तरह से फ़ायदेमंद होगा। जो सिपाही बच गये हैं, वे सब अपने मुल्क को लौटना चाहते हैं।" मगर मेहर ने सेनापति की बात की परवाह नहीं की। वह हठी था।

इस पर फिर सेनापति ने समझाया–"जहाँपनाह! आप तो शाहंशाह कहलाये, नील नदी के सारे राज्यों पर आप ने

सिपाहियों को मारकर तब अपनी जान देता था। लेकिन चिउंटियों की भांति क़तार बांधकर लहरों की तरह आगे बढ़ी आनेवाली मिश्र की फौज का सामना करना उनके लिए नामुमक़िन मालूम हुआ।

बेट्सू राजा ने पहले समझौता करना चाहा, लेकिन वह जानता था कि मेहर समझौते के लिए राजी न होगा, उल्टे समझौते के वास्ते जाने पर उसे बन्दी बनाकर बुरी तरह से मरवा डालेगा। ऐसी हालत में युद्ध करके वीर स्वर्ग को प्राप्त करना ही उत्तम होगा। यह निर्णय करके सारे भीलों को साथ ले दो पहाड़ियों के बीच मिश्र की फौज का भयंकर रूप से सामना किया।

उस महायुद्ध में मेहर के हाथ ही विजय लगी। एक भी पहाड़ी वीर नहीं बचा। मगर मेहर की फौज के हज़ारों सिपाही अपनी जान खो बैठे।

तब बड़ी आतुरता के साथ मेहर ने पूछा–"बेट्सू कहाँ पर है?"

एक सेनापति ने जवाब दिया– "जहाँपनाह, घावों से भरी उसकी लाश हमारे सैनिकों की लाशों के बीच पड़ी हुई है।"

उसे देखने की लालसा से प्रेरित हो मेहर चल पड़ा। जब वह वहाँ पर पहुँचा, तब उसने देखा–वहाँ पर एक काली आकृति के ऊँचा क़दवाला व्यक्ति उन हज़ारों लाशों के बीच खड़े हो चारों तरफ़ परखकर देख रहा है। उसे देखते ही मेहर ने पूछा–"तुम कौन हो?"

सेनापति ने उत्तर दिया–"यह कोई नर मांस भक्षी है। लाशों को नोचकर खाने के लिए आया हुआ मालूम होता है।"

सेनापति की बात सच थी। आफ्रिका के जंगलों में मानवों का मांस खानेवाले कई लोग होते हैं।

मेहर ने उस नर मांस भक्षी से पूछा– "सुनो, तुम्हें इतना सारा मांस एक साथ हाथ लग गया है न? किसी लाश को

उठाकर ले जाते, मगर तुम चारों तरफ़ क्यों नज़र दौड़ा रहे हो?"

"इन सब को खाने के लिए किसी ने इन्हें मार डाला है, पर मुझे तो एक ही लाश की ज़रूरत है। फिर भी उनकी अनुमति लेकर इस लाश को खाना उचित है न? इसीलिए मैं इन्हें मारनेवाले का इंतज़ार कर रहा हूँ।" काले व्यक्ति ने जवाब दिया।

इस पर मेहर ने मुस्कुराकर कहा– "इन सब को मैंने ही मार डाला है; मगर इन्हें खाने के लिए नहीं।"

"अगर खाने के लिए नहीं तो बेकार इतने सारे लोगों की तुमने जान क्यों ली?" काले व्यक्ति ने निडरता के साथ पूछा।

तब मेहर चक्रवर्ती ने सेनापति से कहा– "यह कोई असभ्य मालूम होता है। इसे समझाना हमारे लिए नामुमक़िन है।"

उस वक़्त चक्रवर्ती के पीछे किसी के हँसने की आहट सुनाई दी। मेहर ने झट मुड़कर देखा। उसके सामने जंगलों में तपस्या करनेवाला एक फ़क़ीर खड़े दिखाई दिया।

मेहर ने अचरज में आकर पूछा– "महात्मा! आप हँसते क्यों हैं?"

"सुलतान! तुम जिसे असभ्य समझते हो, वह नर मांस भक्षी सिर्फ़ अपनी भूख मिटाने के लिए ही मानवों को मार डालता है, पर अनावश्यक यह दूसरों की जान नहीं लेता। लेकिन तुम? अपने साम्राज्य को फैलाने के ख़्याल से युद्ध करके अकारण लाखों आदमियों के प्राण ले रहे हो। मेरी बात सही है न? पल भर सोच लो। तुम्हें ख़ुद मालूम हो जाएगा कि तुम दोनों में असभ्य कौन है?" फ़क़ीर ने ऊँची आवाज़ में कहा।

फ़क़ीर की बातों की सचाई को भांपकर मेहर ने शर्म के मारे अपना सिर झुका लिया। यही नहीं, उसी क्षण उसका दिल बदल गया। उसने तभी अपने मन में निश्चय कर लिया–"आज से मैं फिर कभी लड़ाई की बात नहीं सोचूंगा।"

शुक की बातें सुन व्यास महर्षि ने समझाया–"बेटा! सौ वर्ष तपस्या करके मैंने तुम को प्राप्त किया है। तुम मेरी बातों को मान जाओ! तुम यौवन अवस्था में पहुँच गये हो! विवाह करके सुख भोगो! तुम्हें धन का अभाव न हो, इसकी व्यवस्था मैं कर देता हूँ।"

"पिताजी! मैं यह बात कैसे मान सकता हूँ कि विवाह करने पर सुख प्राप्त होगा! मैं प्रति नित्य देख रहा हूँ, असंख्य लोग विवाह करके नाना प्रकार की यातनाएँ झेलते हुए उन्हीं को सुख मानकर परिवार के कूप से बाहर न निकलने की दशा में कैसे क्षीण होते जा रहे हैं! बंधनों से मुक्ति मिल सकती है, मगर नारी की ममता के पाश में फंसनेवाले को कभी नहीं! ऐसे सुख की मैं कैसे कामना कर सकता हूँ?" शुक ने अपने विचार स्पष्ट बताया।

"बेटा! मन को नियंत्रण में रखकर निर्मल बनाना ही मुक्ति का मार्ग है। न्यायपूर्वक धनार्जन करते हुए मिथ्या भाषण न करके अपने कर्तव्यों का पालन करनेवाला गृहस्थ मुक्ति पाता है। सच बात तो यह है कि गृहस्थ रहकर अतिथियों का सत्कार करते हुए बानप्रस्थी तथा गृहस्थों की सहायता करते जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों का आचरण करता है, वह अंत में मुक्ति पा सकता है। इसीलिए तो वशिष्ठ आदि महर्षियों ने गृहस्थाश्रम स्वीकार कर लिया था? वेद विहित कर्म-

४. शुक और जनक का संवाद

काण्डों का आचरण करना है, तो गृहस्थाश्रम को छोड़ दूसरा कोई उपाय नहीं है। उसके सामने अन्य आश्रम धर्म व्यर्थ हैं। अलावा इसके पंचेंद्रिय बड़ी शक्ति रखती हैं। जो विवाह नहीं करता उसे ये इंद्रियाँ गहरे गर्त में ढकेल देती हैं। इसलिए इंद्रियों को नियंत्रण में रखने के लिए विवाह करना ही होगा। वृद्धावस्था में तपस्या करनी होगी!" व्यास महर्षि ने कहा।

शुक ने इस तर्क को न माना, बल्कि गृहस्थाश्रम की निंदा करते हुए यों उत्तर दिया—"परिवार का बंधन फाँसी का एक फंदा है। धन नहीं हो तो अपने ही लोगों के बीच अपमानित होना पड़ता है। धन कमाने के लिए अनेक प्रकार की यातनाएँ झेलनी पड़ती हैं। तीनों लोकों पर शासन करनेवाले इंद्र की अपेक्षा सन्यासी ज्यादा सुखी होता है। यहाँ तक कि ब्रह्मा-विष्णु और ईश्वर को भी सुख कहाँ प्राप्त है? उनके सामने सदा यही चिंता बनी रहती है कि किस दानव का कैसे संहार करे? इस जगत में निर्धनी को ही नहीं, बल्कि धनवान को भी सुख नहीं है। मुझे कोई ज्ञानाश्रयी मार्ग हो तो बताइये!"

शुक की ये बातें सुनने पर व्यास महर्षि ने भांप लिया कि उनके पुत्र का मन वैराग्य की ओर झुका हुआ है, तब यों कहा—"बेटा! मैंने एक समय मुक्ति देनेवाले देवी भागवत की रचना की है, उसे पढ़कर तुम ज्ञानी बन जाओ।"

इसके बाद यों समझाया—"श्री महा विष्णु वट पत्र पर शिशु के रूप में रहकर यों विचार कर रहे थे—'मैं यहाँ पर शिशु रूप में क्यों हूँ? मेरी सृष्टि किसने की? ये बातें मुझे कैसे मालूम होंगी?' इसे देख उन पर रहम खाकर देवी ने आधा श्लोक सुनाया—"यही समस्त है! इसे जान ले तो इसका अर्थ है, अपने आप को समझ लिया है।"

विष्णु ने आधा श्लोक सुना, पर वे उसे समझ न पाये! उन्होंने सोचा—"यह

श्लोक मुझे देनेवाले कौन हैं? नारी है या पुरुष? या इनमें से कोई भी नहीं है?"

इस पर वे उस आधे श्लोक का पठन करने लगे। उस वक़्त महादेवी अपने चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा आदि धारण कर स्वर्णिम वस्त्रों के साथ मंदहास करते उनके समान शक्तियों को साथ ले विष्णु के सामने प्रत्यक्ष हुईं।

देवी को देख विस्मित हो विष्णु कुछ बोल नहीं पाये, उस वक़्त देवी ने उनसे कहा-"माया की वजह से तुम मुझे भूल गये हो! इस वक़्त तुम सगुण हो! मैं सत्व शक्ति हूँ! तुम्हारे नाभि कमल में ब्रह्मा जन्म लेकर रजो गुण संपन्न हो समस्त लोकों की सृष्टि करेंगे। उस सृष्टि के तुम स्थितिकारक रहोगे! उस ब्रह्मदेव की भौहों के मध्य भाग से क्रोधवश रुद्र पैदा होंगे। रुद्र तीव्र तपस्या करके तद्वारा तामस गुणी बनकर प्रलयकाल में ब्रह्म द्वारा सृजित विश्व का नाश कर बैठेंगे। तुम मेरी सहायता के द्वारा विश्व का पोषण करनेवाले हो, इसलिए सत्व शक्तिवाले तुम मुझे ग्रहण करो। मैं सदा तुम्हारे वक्षस्थल में रहूँगी।"

इस पर विष्णु ने पूछा-"मुझे आधा श्लोक ही सुनाई दिया है, बताइये कि यह मैं कैसे सुन पाया?"

"तुम मुझे सगुण रूप में देख रहे हो। तुम्हें वह अर्द्धश्लोक सुनानेवाली निर्गुण स्वरूपिणी परदेवी हैं, यह तो भागवत नामक मंत्र है। तुम पर अनुग्रह करके परदेवी ने तुम्हें यह मंत्र बताया है। तुम इसका पठन करो तो तुम्हारा शुभ होगा।"

विष्णु ने उसी मंत्र के बल पर मधु-कैटभों का वध किया और उनसे डरकर अपनी शरण माँगनेवाले ब्रह्मा को उस मंत्र का उपदेश किया। ब्रह्मा ने नारद को और नारद ने व्यास को उपदेश दिया।

व्यास ने शुक को उस मंत्र का उपदेश देकर कहा-"मैंने इसी की रचना अनेक

संहिताओं के रूप में विस्तार करके रची है।"

इसके बाद शुक उस मंत्र का पठन करते आश्रम में ही रह गये। मगर शुक को चिंतामग्न देख व्यास ने कहा—"तुम मेरे पुत्र होकर भी ज्ञान पाने के वास्ते ऐसी चिंता क्यों करते हो? यदि मेरी बातों पर तुम्हारा विश्वास नहीं जमता तो एक काम करो, मिथिला नगर में राजा जनक हैं। वे शांत स्वभाव के हैं, बड़े ज्ञानी भी। उनके यहाँ जाकर तुम अपने संदेहों का निवारण कर लो।"

"राजत्व और ज्ञान के बीच कैसा संबंध है? राज्य शासन सभी पापों का मूल है। ऐसी हालत में जनक कैसे ज्ञानी बन गये? यह मैं देखना चाहता हूँ। मैं अवश्य उनके यहाँ जाऊँगा।" शुक ने कहा।

"बेटा, तुम हो जाओ! मेरे सारे प्राण तुम पर केन्द्रित हैं। तुम अपने संदेहों का निवारण करके शीघ्र लौट आओ।" यों कहकर व्यास ने अपने पुत्र को विदा किया।

मिथिला में शुक

शुक ने अपने पिता को प्रणाम किया। उनसे विदा लेकर चल पड़ा। रास्ते में पड़नेवाले अनेक देश, जंगल, पर्वत, पुण्य तीर्थ तथा मुनियों के आश्रम देखते मेरु पर्वत के प्रदेश को दो वर्षों में पार किया, हिमालय को एक वर्ष में पार करके मिथिला नगर पहुँचा। वहाँ पर शुक विचित्र दृश्यों को देख रहा था, तब एक द्वारपाल ने शुक से पूछा—"तुम कौन हो? किस काम पर जा रहे हो?"

शुक ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया, नगर द्वार के बाहर जड़वत बैठा रहा। इस पर द्वारपाल ने फिर कहा—"क्या आप यह सोचते हैं कि मौन रहने पर भीतर जाने के लिए अनुमति की आवश्यकता नहीं होती? देखने में तो आप वेदों का अध्ययन करनेवाले ब्राह्मण जैसे लगते हैं, राजा से आप अपने कुल-वंश तथा

उनके साथ अपने काम का परिचय दिये बिना अन्दर नहीं जा सकते ।"

इस पर शुक ने कहा–"मैं जिस काम से राजा से मिलने आया था, वह काम तुमने द्वार पर ही पूरा कर दिया, अब चिंता किसलिए? मैं कष्टों की परवाह किये बिना मेरु पर्वत तथा हिमालयों को पारकर राजा से मिलने का प्रलोभन लेकर आया। यह मेरी भूल थी। साधारणत: लोग धन के वास्ते देशों का भ्रमण करते हैं। धन की आशा के बिना ही मैं अपने पूर्व जन्म के कर्म से प्रेरित हो सारे देश घूमकर आया। कहाँ मेरुपर्वत और कहाँ मिथिला नगर? पैदल इतनी दूर चला आया हूँ तो यह मेरा प्रारब्ध है! पर क्या इसका कोई परिणाम भी है? मेरे श्रम का फल यही है कि किसी द्वारपाल ने मुझे भीतर जाने से रोक रखा है?" ये बातें सुनने पर द्वारपाल को लगा कि यह कोई महान पुरुष हैं! उसने शुक के समीप जाकर विनयपूर्वक कहा–"मैंने आप को रोका, मुझे क्षमा करके आप अन्दर चले जाइये!"

"तुमने अपना कर्तव्य किया तो यह तुम्हारी भूल कैसे होगी? इसमें तुम्हारा क्या दोष है? राजा ने तुम्हें ऐसा आदेश दे दिया है? वास्तव में राजा का भी कोई दोष नहीं है। बिना विचारे यहाँ पर आ जाना मेरी भूल थी।" शुक ने कहा।
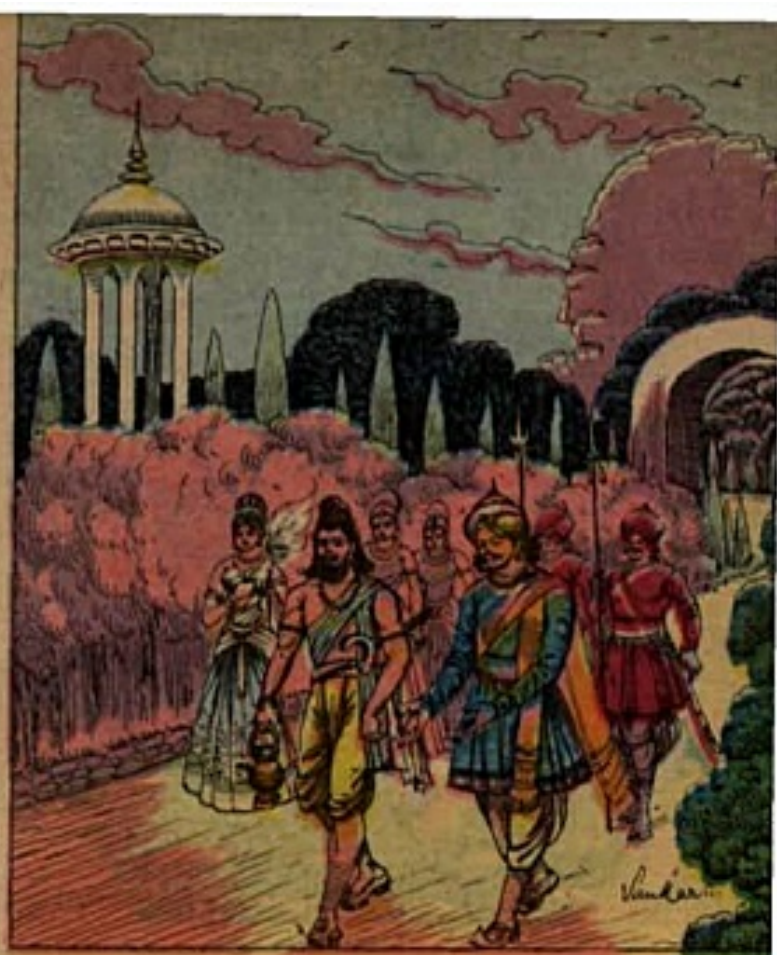
इसके बाद द्वारपाल ने शुक को अन्दर जाने को कहा। शुक भीतर जाकर राजमहल के समीप पहुँचा। वहाँ पर एक और द्वारपाल ने उसे रोका। इस पर शुक मूर्तिवत वहीं पर खड़ा रहा, तब कोई मंत्री उधर से गुजरा। उसने शुक को प्रणाम किया, एक सुंदर राजोद्यान में ले जाकर अतिथि-सत्कार किया। तब समस्त कलाओं में असाधारण प्रज्ञा रखनेवाली तथा अप्सराओं को भी मात करनेवाली सुंदर वेश्याओं को शुक की परिचर्या करने नियुक्त किया, तब मंत्री चला गया। शुक वहीं पर रहने लगा।

शुक की सेवा में नियुक्त वेश्याएँ उसे तरह-तरह के मिष्टान्न खिलातीं, उसे प्रसन्न

रखते हुए उसके सौंदर्य पर मोहित भी हो गईं। पर शुक थोड़ा भी विचलित नहीं हुआ। वेश्याओं ने समझ लिया कि शुक ने इंद्रियों पर विजय पाई है, उसकी साधारण परिचर्याएँ करते उसके शयन का भी प्रबंध किया। शुक रात भर सो गया। सवेरे उठकर ध्यान किया, तब कालकृत्य समाप्त कर पुनः तपस्या की समाधि में चला गया।

शुक-जनक का संवाद

जनक को जब मालूम हुआ कि शुक आया हुआ है, तब अपने पुरोहित को साथ ले आ पहुँचे, अर्घ्य देकर कुशल प्रश्न पूछे, साथ ही एक गाय देकर उसका सत्कार किया। शुक ने आदरपूर्वक जनक से कुशल प्रश्न पूछे।

इसके बाद जनक ने शुक के आगमन का कारण पूछा, तब शुक ने बताया–"राजन, मेरे पिता व्यास महर्षि ने मेरा उपनयन करके विवाह करने की सलाह दी। मैंने सांसारिक बंधनों से डरकर विवाह करने से इनकार किया। उन्होंने बताया कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का संपादन करने के लिए गृहस्थाश्रम ही उत्तम मार्ग है। पर मैंने नहीं माना। तब उन्होंने मुझे सलाह दी कि मिथिला नगर जाकर राजा जनक से अपने संदेहों का निवारण कर लो, इसीलिए मैं आप की सेवा में आया हूँ। मैं मोक्ष पाना चाहता हूँ, कृपया बताइये कि मेरा कर्तव्य क्या है?"

इस पर जनक ने यों उत्तर दिया :

"मोक्ष की कामना करनेवाले व्यक्ति को चाहिए कि प्रारंभ में उपनयन करके वेदों का अध्ययन करे, गुरु दक्षिणा चुकाकर गुरु की अनुमति से विवाह करे, आचार-नियमों का पालन तथा कर्मकाण्ड करते गृहस्थी चलावे, पुत्र और पौत्रों को प्राप्त करे, इसके बाद जंगलों में जाकर वानप्रस्थ करते हुए काम, क्रोध आदि पर विजय प्राप्त कर अग्नियों को अपने भीतर ही आवाहन करे, वैराग्य का अवलंबन कर, पत्नी को त्यागकर तब सन्यास स्वीकार करना होगा। लेकिन ऐसा न

करके प्रारंभ में ही सन्यास ग्रहण करना अनुचित है। पूर्ण रूप से वैराग्य प्राप्त होने पर ही सन्यास ग्रहण करना चाहिए। कुल अड़तालीस संस्कृतियाँ हैं। उनमें चालीस गृहस्थ की हैं और शेष सन्यासी की हैं।

इस पर शुक ने पूछा–"राजन, जब मन में वैराग्य पैदा होता है, तब सन्यास प्राप्त करने में दोष क्या है?"

"बेटा, इंद्रिय अजेय होती हैं। बड़े पंडित को भी उनके अधीन होना पड़ता है। ऐसी हालत में साधारण मनुष्यों की बात क्या कहे? पल-पल पर मन में विकार पैदा होते हैं। खाने की इच्छा, निद्रा की कामना, सुखों की लालसा, संतान की कांक्षा, वे सब सन्यासी के प्रति कैसे पूरी हो सकती हैं? इच्छाओं का दमन कैसे किया जाय? इसलिए समस्त प्रकार के भोगों का अनुभव कर बाद को उन्हें त्यागना होगा। लेकिन पहले ही उन्हें कैसे त्याग दिया जाय? जो ऊपर लेट जाता है, उसे कभी न कभी गिरना पड़ता है। कोई सन्यास लेकर वैराग्य का अनुभव न करने के कारण भोगों के प्रति अगर आसक्ति रखता है, तो उसे नरक की प्राप्ति होगी। क्रमशः ज्ञान का संपादन कर बाद को सन्यास ग्रहण करना होगा। मन सरलतापूर्वक नियंत्रण में नहीं आता। उसे धीरे से रास्ते पर लाना होगा। गृहस्थ के रूप में रहते शांति का अवलंबन करके लाभ प्राप्ति पर उत्साह में आ जाना और नुक़सान होने पर हतोत्साहित होना नहीं चाहिए। जो त्यागमय जीवन व्यतीत करता है, उसे अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है। मुझे देखो, मैं समस्त प्रकार के भोगों का अनुभव करता हूँ। जनता की प्रशंसा पाने लायक़ शासन करता हूँ। यथेच्छापूर्वक जीवन यापन करता हूँ। फिर भी मैं अपने मन को ज्यादा निर्मल रखता हूँ। मरने पर मोक्ष प्राप्त कर लूँगा। तुम भी इसी प्रकार जीवन यापन कर सकते हो न?" यों जनक ने शुक को उपदेश दिया।
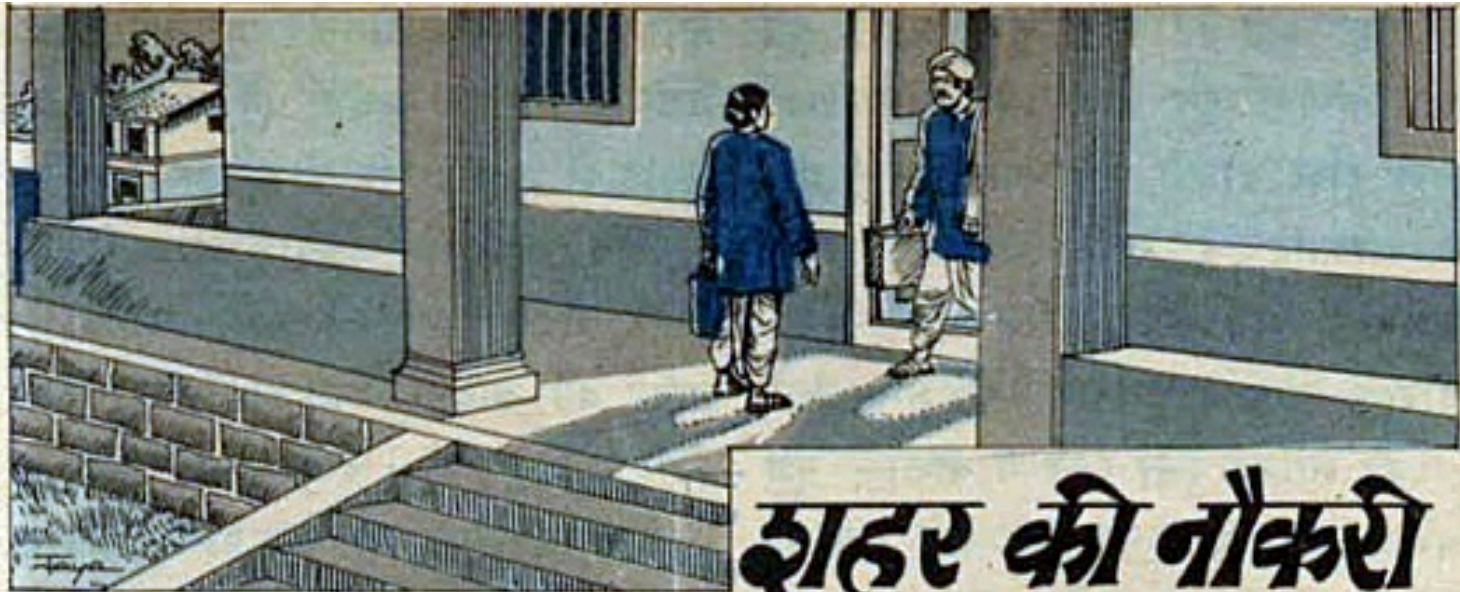
शहर की नौकरी

कनकाद्रि और शेषाद्रि अपनी शिक्षा समाप्त कर शहर की नौकरी के शौक में पड़ गये। उन्हें मालूम हुआ कि नगर पालिका में कर्मचारियों की जरूरत है, इस पर दोनों ने अर्जियाँ भेज दीं। दोनों के पास खबर आई कि अमुक दिन कर्मचारियों का चुनाव होगा।

कनकाद्रि के पिता का एक दोस्त था। उस दोस्त का मुरहरि नामक एक रिश्तेदार उस शहर में रहा करता था। इसलिए कनकाद्रि के पिता ने अपने दोस्त के द्वारा मुरहरि के नाम एक चिट्ठी लिखवाई। वह चिट्ठी उपने पुत्र के हाथ देकर समझाया कि वह धर्मशाला में न ठहरे, बल्कि मुरहरि के घर ठहरे।

कनकाद्रि ने मुरहरि के घर ठहरने का निश्चय किया। मगर शेषाद्रि को अपरिचितों के घर ठहरना कतई पसंद न था, इसलिए उसने धर्मशाला में ठहरना चाहा। उनकी यात्रा में देरी हुई, इस कारण वे अपने पूर्व निर्णय के अनुसार चुनाव के पहले दिन की शाम के बदले चुनाव के दिन के तडके शहर में पहुँचे। सवेरा होने पर नौकरियों का चुनाव था।

शेषाद्रि धर्मशाला की खोज में चल पड़ा। पर कनकाद्रि चिट्ठी पर लिखे पते के आधार पर आसानी से मुरहरि के घर का पता लगाकर वहाँ पहुँचा।

कनकाद्रि उस मकान के पास पहुँचकर दर्वाजे पर दस्तक देने के पहले ही चालीस वर्ष का एक व्यक्ति किवाड़ खोलकर बाहर आया। उसके हाथ में एक अटैची थी, ऐसा लगा कि वह कहीं यात्रा पर जानेवाला है।

कनकाद्रि ने उस व्यक्ति से पूछा– "अजी, मुरहरि साहब का मकान यही है?"

अशोक गुप्त

"हां, यही है! मैं ही मुरहरि हूँ! तुम कौन हो?" इन शब्दों के साथ शंका भरी दृष्टि दौड़ाते उस व्यक्ति ने पूछा।

कनकाद्रि ने अपना परिचय देकर बताया-"आज सवेरे परीक्षा है, मैं थका-मांदा हूँ, थोड़ी देर आराम करने आया हूँ।"

वह व्यक्ति दुखी स्वर में बोला-"मुझे अभी खबर मिली कि मेरे बड़े भाई की तबीयत खराब है, इसलिए मैं तुरंत चला जा रहा हूँ। तुम समझ लो कि यह मकान तुम्हारा ही है। मैं कल शाम तक लौट आऊँगा।" यों कहकर वह चला गया।

वह मकान बहुत ही बड़ा था। कनकाद्रि ने एक बार सारा मकान घूमकर देखा। तब बीचवाले कमरे में खाट डालकर लेट गया। वह ठीक से ऊँघ भी नहीं पाया, तभी दर्वाजे पर दस्तक देने की आवाज़ सुनाई दी। कनकाद्रि चौंक पड़ा। दर्वाजे के पास पहुँच कर किवाड़ खोल दिये। बाहर रोशनी फैल गई थी। मकान के बाहर दस आदमी अपने हाथों में लाठियाँ लिए खड़े हुए थे। किवाड़ के खुलते ही वे लोग कनकाद्रि पर टूट पड़े और उसे पकड़ लिया।

उनके साथ आये हुए एक बूढ़े ने कहा-"यह क़मबख़्त चोर यह समझकर मेरे घर मेहमान की तरह आसन लगाये बैठा है कि मैं लौटकर नहीं आऊँगा। मैं पहले यह देख लेता हूँ कि मेरा धन और गहने सुरक्षित हैं या नहीं!" यों कहकर बूढ़ा
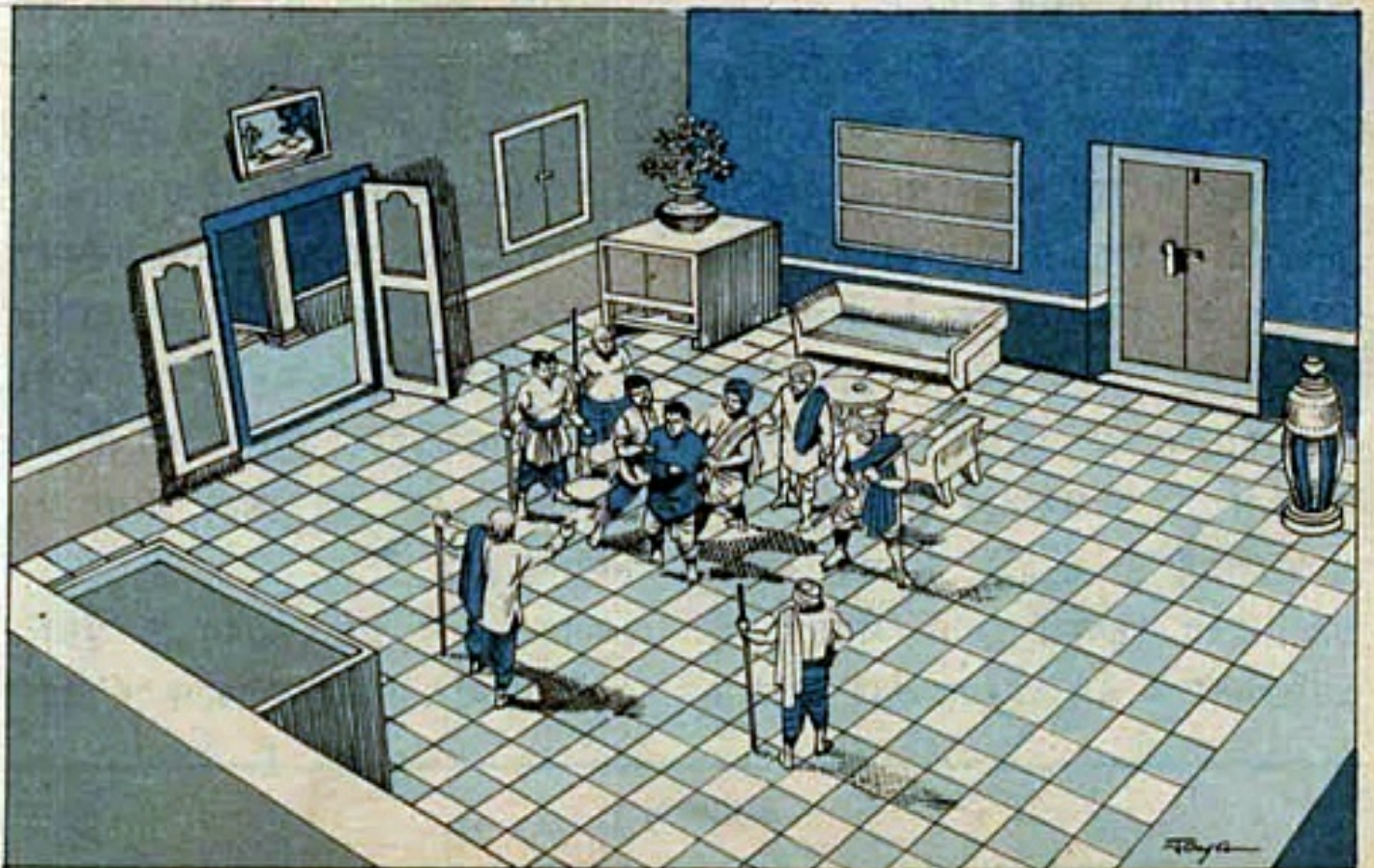
अन्दर पहुँचा। बकसे खोलकर देखा, छाती पीटते हुए बोला–"मेरे गहने और रुपये गायब हैं। इस बदमाश ने किसी के हाथ बाहर भेज दिया होगा।" इन शब्दों के साथ बूढ़े ने कनकाद्रि का गला पकड़ लिया।

"मैं चोर नहीं हूँ! मैं अभी थोड़ी देर पहले यहाँ पहुँचा हूँ।" कनकाद्रि ने सारी कहानी सुनाई।

"यह सब झूठ है! बताओ, तुम्हारा साथी चोर कहाँ चला गया है?" यों कहते बूढ़े ने कनकाद्रि को पीटा।

कनकाद्रि अपमान के भार से भर उठा। एक ओर नौकरी की परीक्षा के समय की चिंता थी! यह तो नया शहर है, इस शहर में कौन उसे पहचान लेगा? उसे जो आदमी मकान सौंप गया है, वह बदमाश चोर होगा! इसका मतलब है कि शहर में चोर ठाठ से चलते हैं!

कनकाद्रि ने सब को प्रणाम करते हुए विनयपूर्ण स्वर में कहा–"मैं नहीं जानता था कि वह आदमी चोर है! मैं यहाँ पर नौकरी की प्रतियोगिता की परीक्षा देने आया हूँ। मेरे पिताजी के दोस्त ने इस पते पर चिट्ठी दी है। क्या यह मुरहरि जी का मकान नहीं है?" इन शब्दों के साथ कनकाद्रि ने चिट्ठी दिखला दी।

मुरहरि ने छे महीने पहले उस मकान को खाली कर दिया था। भीड़ में से एक ने सलाह दी–"इसको एक कमरे

में बंदकर मुरहरि को बुला लाओ।" इसके बाद कनकाद्रि को एक कमरे में बंदकर मुरहरि को कुछ लोग बुला लाये। तब तक दुपहर हो गई थी। कनकाद्रि यात्रा की थकावट, भूख, निद्रा का अभाव और प्रतियोगिता-परीक्षा के समय के बीत जाने की चिंता में अधमरा हो चुका था।

मुरहरि ने कनकाद्रि के हाथ से चिट्ठी लेकर पढ़ा और कहा-"यह चिट्ठी सचमुच मेरे दोस्त की लिखी हुई है। पर मैंने इस लड़के को इसके पूर्व नहीं देखा था, लेकिन यह निश्चय ही मेरे ही गाँव का निवासी है।"

इसके बाद सब ने कनकाद्रि से क्षमा माँगी और उसे छोड़ दिया। मुरहरि ने कनकाद्रि को अपने घर निमंत्रित किया, लेकिन कनकाद्रि ने कहा-"आज आप ने मेरा महान उपकार किया है। मैं अब अपने गाँव चला जाऊँगा। यहाँ पर मेरी परीक्षा हो गई है!" यों कहते कनकाद्रि वहाँ से चल पड़ा। इस बीच शेषाद्रि कनकाद्रि के सामने आया और पूछा-"तुम परीक्षा देने क्यों नहीं आये?"

कनकाद्रि ने सारी कहानी सुनाई। तब शेषाद्रि ने उसे समझाया-"शहर की नौकरी तुम्हें सटीक नहीं बैठती। शहर में धोखा-धड़ी तो आम बात है। बड़ी होशियारी से उनका सामना करना होगा। तुम्हें यह कहकर उन्हें रगरपालिका के दफ़्तर के पास लिवा लाना चाहिए था कि मैं चोर को दिखा देता हूँ! वहाँ पर मैं था ही। हमारी अर्जियाँ दफ़्तर में मिलेंगी ही। उनके आधार पर यह बड़ी आसानी से साबित हो जाता कि तुम चोर नहीं हो! तुम परीक्षा में भी शरीक़ हो जाते। मुझे दो दिन में नौकरी में शामिल होने को बताया गया है। इस बीच मैं तुम्हें तुम्हारे पिता के हाथ सौंप देता हूँ।"

इसके बाद कनकाद्रि ने अपने गाँव पहुँचकर खेतीबाड़ी शुरू की।

गुरु जब शिष्य बना

एक सन्यासी के यहाँ तीन-चार शिष्य थे। उनमें सदानंद बड़ा ही बुद्धिमान था। सन्यासी के व्याख्यान बड़े ही प्रभावशाली होते थे। सदानंद भी सोचा करता था कि अगर उसे भी मौक़ा मिले तो वह भी मधुर भाषण दे सकता है। एक बार उसने हिम्मत करके अपनी इच्छा गुरु के सामने प्रकट की। गुरु ने बताया कि मौक़ा मिलने पर ऐसा ही कर सकते हो।

एक बार एक सुदूर देहात से सन्यासी को निमंत्रण मिला। वहाँ पर सन्यासी को कोई जानते न थे। इसलिए गुरु ने सदानंद को गेरुए वस्त्र पहनाकर उसे सन्यासी बनाया और वह उसका शिष्य बनकर चल पड़ा।

उनकी युक्ति चल निकली। गाँव में पहुँचकर सदानंद ने प्रभावशाली व्याख्यान दिया। गुरुजी भी काफी संतुष्ट हुए। मगर उनके सामने एक जटिल समस्या पैदा हुई। श्रोताओं में से पाँच लोगों ने पाँच प्रकार के सवाल पूछे। सदानंद उनके जवाब जानता न था। इसलिए उसने अपनी समय स्फूर्ति का परिचय देते हुए कहा–"इन छोटे सवालों के जवाब तो मेरे शिष्य देंगे।"

सन्यासी ने उन प्रश्नों के उत्तर देकर गाँववालों को संतुष्ट किया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ फ़रवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

दिसंबर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : देख हमको हँसे सब कोई !

द्वितीय फोटो : ढले उम्र पूछे न कोई !!

प्रेषक : सुरेन्द्र प्रसाद, हाथी बड़कला, देहरादून (उ. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

चन्दामामा-कैमल रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

इनाम जीतिए

कैमल–पहला इनाम १५ रु.
कैमल–दूसरा इनाम १० रु.
कैमल–तीसरा इनाम ५ रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०
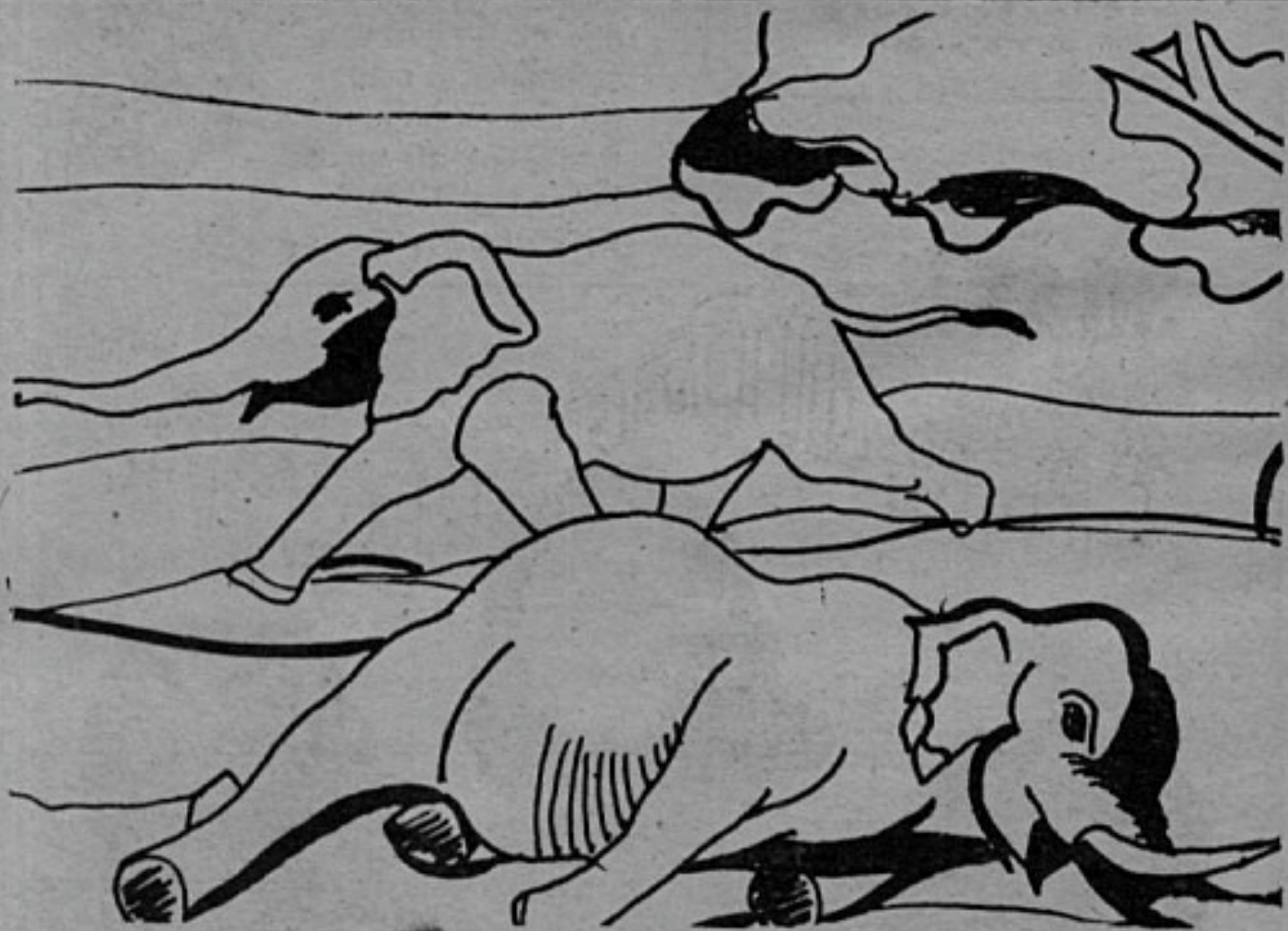
केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामिल हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहें कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए P.B. No. 9928, COLABA, Bombay-400005.

परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

Name.. Age.................

Address...

कृपया अपना नाम और पता अंग्रेज़ी में लिखिए।

CONTEST NO 7

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: 31-3-1979

Vision

किड्डी बैंक योजना

कुमारी रीना बोस ने इस बात के लिए हठ किया कि पांचवी वर्ष-गांठ पर उसे उपहार के रूप में बैंक ही चाहिए.

यह बात सही है कि बैंक के विविध रूप उसके अबोध होने से समझ से बाहर है. पर एक दिन उसने अपनी एक सहेली को 'किड्डी बैंक डाल' के साथ देखा, और उसने इसमें पैसा डालते हुए भी देखा, उसी समय रीनाने एक बैंक-किड्डी बैंक-लेने का निश्चय कर लिया. ताकि वह अपने लिए एक एक छोटी पर ठोस रकम की बचत कर सकें. रीना उन लाखों बच्चों में से एक है, जिसने यह मान लिया है कि आंध्र बैंक के किड्डी बैंक में बचत करना मनोरंजन प्रदान भी कर सकता है.

आंध्र बैंक ने जिसे करीब ५५ वर्ष का बैंकिंग संबंधी अनुभव है तथा देश भर में ६०० से अधिक शाखाएं फैली हुई हैं. अन्य योजनाएं भी तैयार की हैं. जैसे कल्पतरु, भाग्यलक्ष्मी, सुरक्षा, सामक्षेम, जनसहाय, कृषकसहाय, गृहकल्प तथा महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना. साथ ही उद्योगों, प्राथमिकता प्राप्त विभागों तथा गरीब वर्गों के लिए अग्रिम की भी व्यवस्था है. आपकी वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी योजनाओं को काफी सोच-विचार कर तैयार किया गया है.

उसके पिता बोस साहब को लगा कि आंध्र बैंक का किड्डी बैंक अपनी बिटिया रीना को देने के लिए सही उपहार है

दि आंध्र बैंक लिमिटेड

पंजी. व केंद्रीय कार्यालय:
सुलतान बाजार, हैदराबाद-५०० ००१

आंध्र बैंक— जनता की आवश्यकताओं को पूरा करने वाला बैंक

अध्यक्ष : ओ. स्वामीनाथ रेड्डी

KIRON/AB/78-HN

ये हैं बच्चो राम और श्याम

जो बातें नयी बतायेंगे
कागज़ की सुन्दर-सुन्दर चीज़ें
बनाना तुम्हें सिखायेंगे

फिर-फिर फिरती फिरकिरी
जरूरी सामान: पतले कार्ड बोर्ड का चौकोर टुकड़ा, कैंची, कील या पिन, हथौड़ी, बटन, बांस की लकड़ी, पेंसिल, फुटपट्टी.

बनाने का तरीका: पहले चौकोर कार्ड बोर्ड पेपर पर एक कोने से दूसरे कोने तक की दो तिरछी रेखाएं खींच लो. फिर उन रेखाओं पर से उसे बीच की तरफ ठीक आधी दूरी तक काटो. इस बात का ख्याल रखना कि वे आधी दूरी से कहीं ज्यादा न कट जाए.

अब हर कोने को बीच की तरफ मोड़ो और सबको एक साथ पकड़कर पिन या कील उसमें इस तरह से घुसाओ कि नुकीला हिस्सा दूसरी तरफ निकल जाए.

इसके बाद पिछली तरफ बटन पिरो लो और कील को बांस की लकड़ी में ठोक दो. अब हवा का रुख देखो और फिरकिरी को फिरने दो. मज़ा आ जायेगा.

फलों के स्वादवाली गोलियां
रसीली... प्यारी... मज़ेदार

५ फलों के स्वाद—
रासबेरी, अनन्नास,
नीबू, नारंगी व मोसंबी.